

# कोविड कहानियाँ



डा० अरविन्द कुमार सिंह

# कोविड कहानियाँ

कोरोना काल की विज्ञान कहानियाँ

## मार्गदर्शन

श्री सुजीत बनर्जी

वैज्ञानिक 'ई' राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्  
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार नई दिल्ली

## लेखक

डॉ अरविन्द कुमार सिंह

## निर्माण

डॉ अनूप चतुर्वेदी

## डिजाईन

श्री रवि अग्रवाल

## प्रकाशक

इंडियन साइंस कम्युनिकेशन सोसाइटी

चन्द्रिका भवन, 577-डी निकट इंडिया मस्जिद , लखनऊ -226022, भारत

[iscos.org](http://iscos.org); [info@iscos.org](mailto:info@iscos.org); +91-8090907153

© 2021 सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN

प्रथम संस्करण : 2021

**COVID STORIES - Science Stories of Corona Times**



## प्रस्तावना

वर्तमान में कोरोना एक बहुत ही भयानक बीमारी के रूप में पूरे मानव को चुनौती दे रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तो इसे महामारी के रूप में घोषित किया है। एक बहुत ही सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस ने पूरी मानवता को परेशान करके रख दिया है। इस बीमारी का संक्रमण पूरी दुनिया में बहुत ही तेजी के साथ फैल रहा है। कोविड के मामले में यह भी बात सामने आई है कि इसका प्रकृति बहुत तेजी के साथ बदलती है। अतः यह आवश्यक है कि इसकी प्रकृति की बदलाव के साथ ही हम आगे की रणनीति बनाएं और उसका सामना करें। यदि हमारी अच्छी तैयारी रहेगी और लोगों में इसके प्रति जागरूकता होगी तो फिर हम कोरोना बीमारी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे दौर के आरम्भ में जिस तरह से धन जन की तबाही हुई है और उससे विभिन्न प्रकार के अनुभव मिले हैं, अब उससे सबक लेते हुए तीसरी लहर की जो कल्पना की जा रही है, उसके संदर्भ में तैयारी आरंभ कर देने की आवश्यकता है A

जब आँकड़े हमारे सामने हैं तो हमें हमारी तैयारी भी उसके अनुसार प्रभावी ढंग से करनी चाहिए। हालांकि कई बार ये आँकड़े गलत भी हो जाते हैं। उदाहरण के लिए अप्रैल 2021 में यह आँकलन किया गया था कि एक लाख मरीज इस बीमारी से संक्रमित होंगे। किंतु यह संख्या पाँच लाख तक पहुंच गई है। अतः आवश्यक है कि हम पीछे की बातों से भी सबक लेते हुए आगे की प्रभावी रणनीति अपनाये।

जनवरी 2021 के बाद जब कोरोना का प्रभाव घटने लगा तो लोगों की लापरवाही बढ़ने लगी थी। सरकार द्वारा बार बार आगाह किये जाने के बावजूद कोरोना संबंधी जितने भी बचाव के ऐहतियात या तरीके बताए गए थे, उन सबका उल्लंघन करके लोग एक दूसरे से मिलने जुलने लगे थे। वे मास्क लगाना बंद कर दिए थे और सेनीटाइजर का भी उपयोग करना बंद कर दिए थे, दूसरी तरफ, वे सामाजिक दूरी या सोशल डिस्टेंस का भी पालन नहीं कर रहे थे। यह एक प्रकार की घोर लापरवाही ही कही जायेगी।

इसका परिणाम यह रहा कि पहले दौर में कोरोना से संक्रमित सदस्यों की संख्या जहाँ कम थी, किंतु दूसरे दौर में कहीं ज्यादा भयावह रूप सामने आयी है। पहले दौर की अपेक्षा दूसरे दौर में यह अधिक व्यक्तियों को संक्रमित कर रहा है। हम जानते हैं कि अभी भी इस संक्रमण को रोकने के लिए कोई बहुत प्रभावी तरीका नहीं विकसित हो पाया है। ऐसी स्थिति में टीकाकरण ही एक ऐसा उपाय है जिससे कि इस गंभीर बीमारी पर नियंत्रण पाया जा सकता है और मौतों को कम किया जा सकता है। किंतु अभी तक इस

बीमारी से बचाव के लिए जो कुछ भी उपाय बनाए जा सकते हैं, कम से कम उसका पालन हर एक व्यक्ति के लिए बहुत ही आवश्यक है और यही सबका धर्म है कि वे मास्क लगाएं, टीकाकरण कराए और सभी तरह के सार्वजनिक आयोजनों में भाग लेने से बचें। यह सन्तोष की बात है कि कोरोना बीमारी से उपजे परिवेश से निपटने के लिए कई स्तरों पर तैयारी की जा रही है। डीआरडीओ द्वारा दवा की खोज की गई है। इस दवा के उपयोग की मंजूरी दे दी गई है और उम्मीद है कि भविष्य में इस दवा का अधिक व्यापक पैमाने पर उत्पादन होगा। यह जेनेरिक दवा है, इसलिए इसके उत्पादन में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। अभी उम्मीद की जानी चाहिए कि कोरोना वायरस के बदले हुए रूपों से जो मरीज शिकार हुए, उन सब पर इन सब दवाओं का असर होगा। वर्तमान में देखा गया कि सरकार ने विभिन्न प्रकार की सुविधाओं को देने के लिए काफी प्रयास कर रही है।

सरकारी संस्थाओं के साथ साथ निजी संस्थाओं को भी इस महामारी से लड़ने के लिए हर तरह से सजग रहने की आवश्यकता है। कोरोनारोधी दवा विकसित करने के साथ-साथ कोरोना के बदले हुए रूपों की प्रकृति का अध्ययन करने में भी युद्ध स्तर पर जुट जाने की आवश्यकता बन गई है और इसमें किसी तरह की कोताही नहीं बरतनी चाहिए। कोरोना से लड़ाई बहुत ही एक कठिन संघर्ष है। इससे इस समय बहुत ही कठिन स्थिति पैदा हुई है। इस समय कोविड टीका को अधिकतम तीव्र गति से क्रियान्वयन करने की आवश्यकता है। यह बहुत ही सन्तोष की बात है कि केन्द्र सरकार और सभी राज्य सरकारें इस कार्य में पूरे जी जान से जुटी हुई हैं। इसके बारे में लोगों के बीच जनजागरण करने की आवश्यकता है। इस जनजागरण कार्य को विविध प्रकार से किया भी जा रहा है। इस सन्दर्भ में विविध जनमाध्यमों पर जागरूकता पैदा करने के लिए कोविड सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की सामग्री दी जा रही है। इसमें एक तरफ समाचार एवं लेख दिये जा रहे हैं, तो वही पर दूसरी तरफ, लोगों के बीच कथा साहित्य के माध्यम से भी कोरोना के बारे में जानकारी दी जा रही है।

इस तथ्य को ध्यान में रख करके डॉक्टर अरविन्द कुमार सिंह द्वारा लिखी गयी ई पुस्तक 'कोविड कहानी' बहुत ही उपयोगी पुस्तक है। इसमें कोविड बीमारी के विविध पक्षों को लेकर बहुत ही सरल ढंग से घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है। इसे पढ़ कर कोविड के दौर के विविध घटनाक्रमों की झलक तो मिलती ही है, उसी के साथ उन विन्दुओं पर भी प्रकाश पड़ता है कि किस प्रकार से कोविड के दौर में मानव ने विविध त्रासदियों का सामना करते हुए मानवता एवं जीवन को बचाये रखने का प्रयास किया।

हमें पूरी उम्मीद है कि कोविड कहानियां पुस्तक जनसामान्य के बीच कोविड बीमारी के दौर की विविध घटनाक्रमों के प्रति लोगों को और अधिक जागरूक बनाने और इस प्रकार की स्थितियों का सामना करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

**डॉ० सर्वेन्द्र विक्रम**

निदेशक राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद  
उत्तर प्रदेश लखनऊ

# लेखक की बातें

कहानी साहित्य में लिखे जाने वाले सबसे पुरानी विधाओं में से एक है। जनजीवन में सबसे सरल एवं सहज ढंग से प्रस्तुत की जाने वाली यह विधा है। जीवन की विभिन्न प्रकार की घटनाओं को व्यक्ति स्वभावतः ही कथा के रूप में प्रस्तुत करता है। कहानी को कई नामों से भी पुकारा जाता रहा है। इसमें गल्प, कथा शब्द मुख्य हैं। आज के साहित्य में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। पहले भले ही इसका उद्देश्य सीमित तौर पर रहा हो, किन्तु वर्तमान में यह मानवीय संवेदना को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है।

माननीय सभ्यता में कथा सुनाना एक बहुत ही पुरानी परंपरा रही है। सच कहे तो मानव जीवन जब से आरंभ हुआ है, उसी समय से वह अपनी बातों को बताने के लिए कथा कहने का सहारा लेता रहा है। कथाओं को कई तरीके से प्रस्तुत किया जाता रहा है। इसे परफॉर्म किया जा सकता है। कविता, गीत, नाटक आदि रूपों में इसे प्रस्तुत किया जाता रहा है। किंतु इसमें कहानी को बोल करके सुनाने की जो परंपरा रही है, वह सबसे ज्यादा सशक्त और प्रभावशाली परंपरा के रूप में मानी गई है और जब कहानी की बात होती है, तो उसमें इसी फॉर्मेट को सबसे अधिक ध्यान जाता है। कहानी को विविध रूपों में प्रस्तुत किया जाता है। कुछ कहानी बहुत ही गतिशीलता लिए होती हैं।

कहानी का हमारे जीवन में बहुत ही महत्व है। कहानी के माध्यम से हम अपने जीवन के अनुभवों को दूसरों के साथ भागीदारी करते हैं। कहानी में जो भी बातें बतलाई जाती है, उसके द्वारा दूसरा सुनने वाला व्यक्ति उसकी कल्पना करता है। कहानी जीवन के अनुभव को जानने समझने का बहुत ही सशक्त माध्यम है। कहानी के द्वारा हम बहुत ऐसे अनुभवों से गुजरते हैं जो कि जीवन में उपलब्ध नहीं होते हैं। कहानी में जैसा कथन होता है, उसी अनुसार व्यक्ति की अनुभूति होती है।

एक कहानी अच्छी कहानी तब होती है, जब वह सुनने वाले के लिए एक मार्गदर्शक प्रेरणा का भी कार्य करती है और यह भी शोध से साबित हुआ है कि यदि कहानी को बहुत अच्छी तरीके से प्रस्तुत किया जाए और उसमें किसी भी घटनाक्रम को एक मार्गदर्शक रूप में प्रस्तुत किया जाए तो उससे व्यक्ति के जीवन में भी बदलाव आता है और वह उसके लिए शिक्षाप्रद होती है। उसके माध्यम से वह मार्गदर्शन प्राप्त करता है। उसे निर्देशन मिलता है और वह प्रेरणा भी प्राप्त करता है। जीवन के विभिन्न चुनौतियों का सामना करने में अच्छी कहानियों

से मदद मिलती है।

कहानी हमें कल्पना विकसित करने में भी मदद करती है। जैसे घटनाओं को भी जब कहानी के रूप में सुनाया जाता है तो व्यक्ति संबंधित घटना के दृश्य को अपने मस्तिष्क में निरूपित करता है और वह उन बातों को समझने का प्रयास करता है। कहानी के द्वारा व्यक्ति पुरानी घटनाओं को जानता एवं सीखता है। कई बार तो कहानियां परिवारिक कहानी के रूप में एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक गुजरती चली जाती हैं और उसके माध्यम से व्यक्ति को अपने और अपने घर, परिवार, समाज के बारे में जानने समझने में मदद मिलती है।

इसी के साथ उसे अपनी सभ्यता, संस्कृति, विश्वास के बारे में भी जानकारी मिलती है। एक कहानी जब लिखी गई रहती है और वह एक रूप में पड़ी होती है। किन्तु जब कभी भी कोई व्यक्ति उसे पढ़ता है, तो उसके द्वारा बताई गई बातों को जानता और समझता है कहानी में जीवन की विभिन्न प्रकार की घटनाओं का सही ढंग से वर्णन के माध्यम से किसी जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया गया रहता है। फिर जब व्यक्ति के वास्तविक जीवन में जब इस प्रकार की समस्याएं सामने आती हैं तो उन कहानियों के माध्यम से उनका समाधान होता है।

कहानी व्यक्ति के ध्यान को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विभिन्न समय में जब व्यक्ति किसी भी ऐसी स्थिति में होता है, जब वह अन्य प्रकार से कार्य नहीं कर रहा होता है तो उस स्थिति में वह कहानी के माध्यम से अपना समय व्यतीत करता है। इसके द्वारा वह न केवल अपने समय को सही तरीके से व्यतीत करता है, वरन जीवन के उन पक्षों को भी जान सकता है जो कि व्यक्ति विभिन्न स्थितियों में व्यावहारिक तौर पर जी करके जानता है। वर्तमान में कहानियों को बताने सुनाने के लिए विभिन्न प्रकार के तकनीक आ गए हैं। पहले कहानियां सामाजिक जीवन में घर, परिवार या किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा सुनाई जाती थी। बाद में यह फिर प्रिंट माध्यम में उपलब्ध होती रही हैं। लोग उसे पढ़ते रहे हैं। वर्तमान में वेब मीडिया पर कहानियों की श्रृंखला ही उपलब्ध है और जो पोस्ट के माध्यम से किया जा सकता है।

कहानी के माध्यम से हम जीवन के विभिन्न अवस्थाओं को बहुत करीब से जानते और समझते हैं। यह हमें उन स्थितियों को जानने समझने में मदद करती है जिन स्थितियों में व्यक्ति को अपने जीवन में गुजरना पड़ता है। बच्चों का जब विकास हो रहा होता है, उस समय पर यदि उनके समक्ष अच्छी से अच्छी कहानियां प्रस्तुत की जाएं तो उसके माध्यम से जीवन के बहुत से मूल्यों और आदर्शों को सीखते हैं। इसी प्रकार से कहानी के माध्यम से हम स्वयं अपने बारे में भी समझते हैं और चरित्र के निर्माण में भी कहानी सुनने की बड़ी भूमिका होती है। कहानी के माध्यम से पाठक व्यवहार कुशलता सीखते हैं और मानवीय मनोविज्ञान को जान समझ सकते हैं जो कि बाद के जीवन में हमारे लिए बहुत ही उपयोगी

साबित होती है।

वर्तमान समाज विभिन्न प्रकार की त्रासदियों से गुजर रहा है और इसमें से एक बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण घटना कोविड बीमारी का होना है। यह बीमारी अन्य बीमारियों से कई मायनों में अलग रही हैं। इसके बारे में पहले से किसी प्रकार की कोई जानकारी नहीं रही है। इस कारण इस बीमारी से बचाव ही एक कारगर इलाज माना जाता रहा है। कोविड के टीका की खोज के पहले तक तो यह अति आवश्यक माना जाता रहा, किन्तु कोविड टीका के बाद भी ऐहतियात के तौर पर इस बीमारी से बचने के लिए बचाव के सभी उपाय अपनाये जाने अति आवश्यक है। इस कारण से इसके बारे में जागरूकता बनाये रखना जरूरी हो गया है।

उक्त तथ्य को ध्यान में रख करके कोविड के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए कहानी माध्यम को अपनाया गया है। कोविड बीमारी के दौरान विविध प्रकार की ऐसी घटनाएं हुईं जो कि काफी दुखद रही हैं, वहीं पर इस त्रासदी का बहादुरी के साथ सामना करने की कई प्रेरक घटनाएं भी हुईं हैं। प्रस्तुत ई बुक कोविड कहानियाँ में ऐसी ही कथाओं के माध्यम से समाज में एक सन्देश देने का प्रयास किया गया है जिससे कि लोगों को एक एहसास और मार्गदर्शन मिल सके। हमें उम्मीद है कि यह अपने उद्देश्य में काफी हद तक सफल होगी।

**डॉ० अरविन्द कुमार सिंह**

# विषय सूची

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	ऑनलाइन शिक्षा	02
2	कोविड चुनौती का सामना	06
3	नया अवसर	10
4	भूल का प्रायश्चित	15
5	कोविड सूचना केंद्र	19
6	दूसरी लहर की सजा	26
7	दोस्त के दर्द का एहसास	29
8	टीके का असर	33
9	कोविड प्रोजेक्ट	36
10	भग्गू के ज्ञान की परीक्षा	40
11	टीका पंजीकरण का फर्जी सन्देश	43
12	कोविड से सबक	45
13	जाँच का भय	50
14	ग्राम प्रधान की दूरदर्शिता	53
15	सामाजिक दायित्व का निर्वाह	58
16	कोविड में आलस	62
17	आइसोलेशन का दर्द	65
18	रामलाल की दिनचर्या	68
19	टीके का भय	73
20	हिमोग्लोबिन की कमी	76
21	कार्यालय यात्रा की रिपोर्ट	79
22	नियम पालन कराने का रोचक तरीका	85



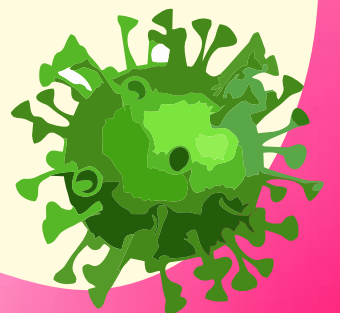


# ऑनलाइन शिक्षा





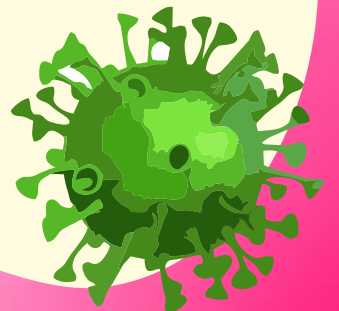
कोविड बीमारी के प्रसार की आशंकावश लॉकडाउन होने के कारण सभी स्कूल, कॉलेज बंद हो गए थे। सभी बाजार और दुकाने भी बन्द हो गयी थी। अभी स्थिति इस प्रकार की थी जिसमें कि कोई कहीं पर आ जा नहीं सकता था। इस दौरान गाँवों में तो कुछ गनीमत थी, किन्तु शहर के मोहल्ले, कोलोनी में तो बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। बच्चों की भी एक दूसरे से भेंट मुलाकात नहीं होती थी। इन सभी जगहों पर बच्चे अब अपने घरों तक ही सीमित थे। स्कूल बन्द होने के कारण अब उनकी पढ़ाई का भी काफी नुकसान होने लगा था। उधर बच्चों के लिए तो यह अवसर एक छुट्टी की तरह था, घर से बाहर तो वे कहीं जा नहीं सकते थे। किन्तु घर में रह करके वे पूरे दिन टीवी देखते, फिर मोबाइल पर कोई न कोई गेम खेलते और फिर उसके बाद आपस में मिल कर शैतानी करते थे। पूरे मोहल्ले के सभी बच्चों का यही हाल था। कई घरों में तो भाई बहनों की आपस में कई बार लड़ाई भी हो जाती थी। फिर वे आपस में मार पीट करते थे। इससे उनके माता पिता भी हैरान और परेशान रहते थे। कभी कभी वे परेशान हो करके उनकी जम कर पिटाई भी कर देते थे। फिर तो पूरे घर में एक हंगामा मच जाता था। यही कुछ हाल मोहित के घर का भी था। वह घर में दिन भर मोबाइल पर गेम खेलता रहता था या टीवी पर बच्चों के कार्यक्रम को देखता रहता था। फिर वह अपनी बहन से खेलता और इस दौरान अक्सर उससे झगड़ा करता रहता था। कहते हैं खाली दिमाग शैतान का घर होता है। यह बात उस पर पूरी तरह से लागू हो रही थी। मोहित की मां इस बात को लेकर काफी परेशान थी कि उसका बेटा लॉक डाउन के दौरान कुछ भी नहीं पढ़ रहा था। जब भी वह उसे पढ़ने के लिए कहती, तो वह तुरन्त स्कूल बंद होने की बात का बहाना बता देता। फिर वह कहता कि मास्टर सर ने जो कुछ पढ़ाया था, वह पहले ही पढ़ लिया है। इस तरह वह वह पूरे दिन टीवी देखता और मोबाइल पर गेम खेलता रहता था। एक दिन मोहित की माँ ने हाल चाल लेने के लिए अपने दोस्त रीमा को फोन किया। काफी देर तक उन दोनों में बातें होती रही। बात चीत करते हुए जब उससे रीमा ने मोहित के बारे में पूछा तो फिर मोहित की माँ ने सारी बातें बतलाते हुए मोहित द्वारा कुछ भी न पढ़े जाने की भी बात बतायी। उसने कहा कि अब यह एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है।





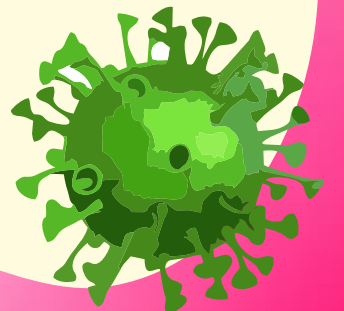
जब उसके दोस्त पूछा कि क्या वह कोई आनलाइन क्लास नहीं करता है, इस पर मोहित की माँ ने नकारात्मक उत्तर दिया। तब रीमा ने उसे आनलाइन क्लास करने की सलाह दी। उसने बताया कि इस समय तो कई ऐसे वेबसाइट हैं, जिन पर कि बहुत ही कम पैसे में सभी विषयों में आनलाइन शिक्षण कार्य किये जा रहे हैं। मोहित की माँ यह सुन करके काफी हैरान होने के साथ साथ खुश भी हुई, क्योंकि उसे आनलाइन कक्षा की बिल्कुल जानकारी नहीं थी। अब मोहित के पढ़ने के लिए एक रास्ता बनता दिखायी दे रहा था। उसने उत्सुकतावश रीमा से उसके बारे में और भी सारी बातें पता लगायी। तब रीमा ने उसे बताया कि वेबसाइट पर विभिन्न विषयों में शिक्षण कार्य किया जाता है और यह कई प्रकार के हैं। उसने कुछ बहुत ही अच्छे वेबसाइट के बारे में भी जानकारी दी। उसने ई पाठशाला के बारे में भी बताया। इसी के साथ रीमा ने बताया कि उसकी बेटी काफी दिनों से आन लाइन माध्यम पर ही शिक्षा ले रही है।

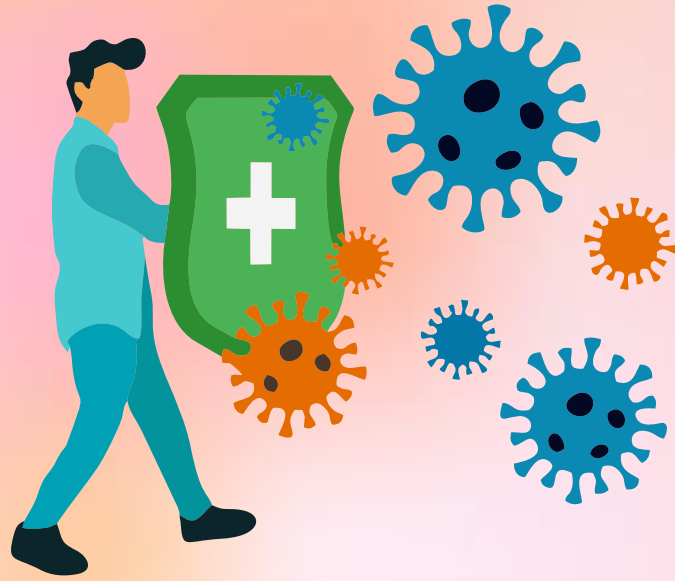
यह सब बातें जानने के बाद मोहित की माँ ने मोबाइल पर रीमा द्वारा बताये गये वेबसाइट खोजना आरंभ किया। यह देखकर वह हैरान हो गई कि साइट पर बहुत से शिक्षण सामग्री तो बिल्कुल मुफ्त में उपलब्ध हैं। उसने अपने बेटे मोहित को बताया और उसे इसके बारे में जानकारी दी। मोहित के लिए भी यह एक बिल्कुल नया अनुभव था। वह मोबाइल पर गेम के आगे और कुछ देखता सुनता ही नहीं था। वह साइट पर विभिन्न प्रकार के विषयों के बारे में दिए गए शिक्षण सामग्री को विस्तार से देखा। इसी बीच मोबाइल पर मोहित के विद्यालय से फोन भी आया। इसमें बताया गया कि उसके विद्यालय के शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षण कार्य आरंभ किया है और अब एक ग्रुप बनाया जा रहा है, जिसमें सभी बच्चों को शामिल होना था। यह बात जब मोहित ने अपनी माँ को बतायी, तो उसे भी बहुत खुशी हुई। अब घर बैठे ही अपने सभी विषयों को ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से पढ़ने का अवसर मिलने लगा। आनलाइन माध्यम से कक्षा करने के दौरान पहले उसे कक्षा में बातचीत करने में संकोच होता था, किंतु धीरे-धीरे वह इसके प्रति अभ्यस्त हो गया और फिर उसका शिक्षण कार्य सुचारु रूप से चलने लगा। अब उसे जो कुछ भी नहीं समझ में आता था, तो फिर उसे बिना किसी संकोच के पूछता भी था।





बाद में विद्यालय की तरफ से बच्चों का जो ग्रुप बनाया गया था, उस पर शिक्षक सब शिक्षण सम्बन्धी सामग्री एवं अन्य सभी प्रकार की सूचनाएं पोस्ट कर देते थे। इस पर मोहित सहित सभी बच्चों के लिए होमवर्क भी दिया जाता था। इस प्रकार अब नित्य शिक्षण कार्य और होमवर्क करने से मोहित घर में अनुशासित ढंग से रहने लगा और उसकी बहन से लड़ाई झगड़ा भी कम हो गया। उसकी माँ को भी काफी खुशी हुई कि छुट्टी के बावजूद मोहित का शिक्षा कार्य जारी था।





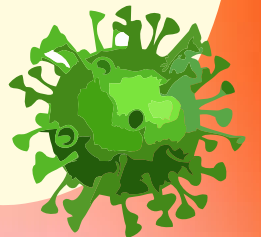
# कोविड चुनौती का सामना





मोहन शहर में अपने माता पिता के साथ रहता था। उसके पिताजी मुकेश शहर में ही एक बहुत ही छोटी सी कम्पनी में नौकरी करते थे। मोहन शहर एक के विद्यालय में पढ़ता था। उसकी बहन काफी छोटी थी। वह अभी विद्यालय नहीं जाती थी। उसके परिवार में सब कुछ सही प्रकार से चल रहा था। इसी बीच कोविड की बीमारी के आने की चर्चा पूरे देश में होने लगी लगी। कोविड के प्रसार को रोकने के लिए सरकार अपने स्तर से एहतियात के तौर पर कई प्रकार के कदम उठा रही थी। किन्तु आखिर में हार करके उसके प्रसार को रोकने के लिए पूरे देश में एक साथ लॉक डाउन लगाना पड़ा। इस कारण उसके शहर में भी लॉक डाउन हो गया। लॉक डाउन के कारण सभी स्कूल कालेज, दुकान, प्रतिष्ठान एवं अन्य सभी कम्पनी आदि बन्द हो गये। अब वह कम्पनी भी बन्द हो गयी, जिसमें कि मोहन के पिता नौकरी करते थे। इस कम्पनी के बंद हो जाने के कारण पहले एक माह तो उनको तनख्वाह दी गयी। किन्तु बाद में यह वेतन मिलना बन्द हो गया। कुल मिला करके यह हुआ कि उनकी नौकरी भी छूट गई। उनके पास आय का तत्काल दूसरा कोई साधन नहीं था। अब शहर में रहने में कठिनाई होने लगी। कुछ दिन तक तो किसी तरीके से वह शहर में रहे। इस दौरान पहले बैंक में कुछ जमा किये गये पैसे से काम चलाया। इसे वे काफी पहले थोड़ी थोड़ी-थोड़ी बचत करके एक एफडी के रूप में जमा किये थे। मजबूर हो करके जब लॉक डाउन में थोड़ी ढील दी गयी, तो फिर वे उस एफडी को भी तोड़वा दिया। उससे जो कुछ भी पैसा मिला, उसी से वे कुछ दिन तक अपना परिवार का भरण पोषण किया। किन्तु कुछ ही दिनों में वह पैसा भी समाप्त हो गया। इसके बाद वह आगे का खर्च चलाने के लिए अपने करीबी मित्रों से कुछ पैसे उधार भी लिए। किन्तु इस प्रकार से शहर में रहना बहुत दिनों तक संभव नहीं था। इधर लॉकडाउन की अवधि बढ़ती ही जा रही थी। पहले तो वे शहर में इस उम्मीद में रुके हुए थे कि जल्दी ही लॉक डाउन समाप्त हो जायेगा। किन्तु यह लगातार बढ़ता ही जा रहा था। अब शहर में रहने में काफी समस्या होने लगी।

आखिर उधार के बल पर कोई कब रह सकता है ? कई बार घर में भोजन की भी

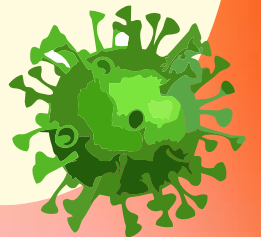
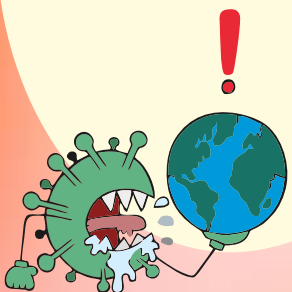




समस्या हो जाती थी। जिस किराये के मकान में वह रह रहे थे, अब उसका किराया देने में भी समस्या होने लगी। जब शहर में रहने में बहुत ही कठिनाई होने लगी और बच्चे भी परेशान होने लगे, तो मोहन के माता पिता ने अपने गाँव वापस जाने का निर्णय लिया। गाँव में उनकी थोड़ी सी जमीन थी। अभी तो उन्होंने यही निर्णय लिया कि वह गाँव जा करके खेती के माध्यम से परिवार का पालन करेंगे। जब वह पूरी तैयारी कर ली तो फिर घर जाने के लिए निकल पड़े। गाँव जाने में भी उन्हें काफी कठिनाई हुई। किन्तु वह किसी प्रकार से अपने गाँव पहुँचने में सफल हो गये।

किन्तु अपने गाँव स्थित घर वापस आने के बाद मोहन के पिता एवं उसके परिवार को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। गाँव को छोड़े एक लम्बा समय व्यतीत हो गया था। गाँव के घर की हालत भी बहुत अच्छी नहीं थी। पहले कोई सही व्यवस्था न होने कारण से आरम्भ में हर काम में दिक्कत होती थी। गाँव के मकान की हालत भी काफी खराब थी। किन्तु मोहन पिता ने धैर्य के साथ कठिनाई का सामना करते हुए यह निर्णय लिया कि वह यहाँ पर कोई अपना छोटा कारोबार शुरू करेंगे। वह पहले अपने घर की सफाई एवं मरम्मत किया।

किन्तु उनके पास पूँजी की समस्या थी। कम पूँजी में कैसे कोई कार्य किया जा सकता है, इस सन्दर्भ में वह काफी सोच विचार किये। वह कुछ लोगों से बातचीत भी की। भिन्न भिन्न लोग उन्हें भिन्न भिन्न प्रकार की सलाह देने लगे। किन्तु उन सबमें काफी पूँजी की आवश्यकता थी। उनके पास कुछ भी नहीं था। वे किसी कम पूँजी वाले कारोबार को करना चाहते थे। आखिर उन्होंने पाया कि सब्जी की दुकान खोलने में बहुत बड़ी पूँजी की आवश्यकता नहीं होती है। गाँव के कई लोग इस काम में लगे हुए थे। इससे अच्छी आमदनी भी हो जाती है। उन्होंने तय किया कि इस कारोबार को किया जा सकता है। उन्होंने एक छोटी सी दुकान खोली और मंडी से जा करके सब्जी लाना आरंभ किया। इसे लाकर वह कस्बे में लगने वाले बाजार में बेचने लगे।

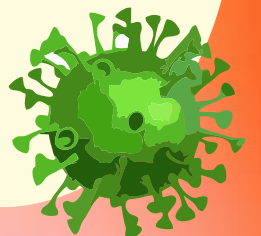




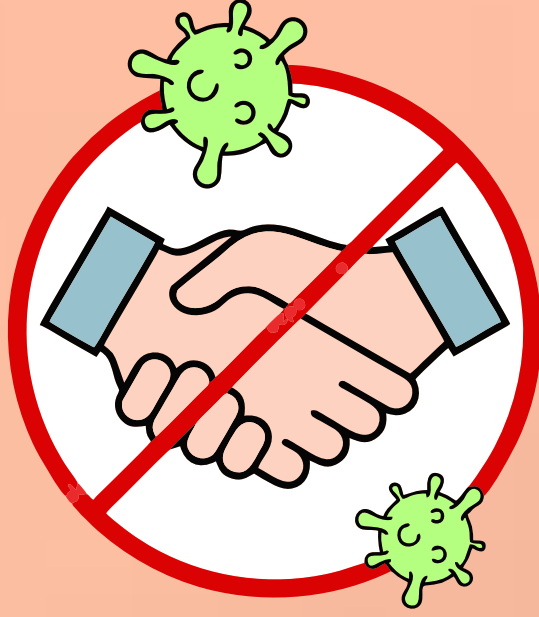
मोहन के पिता की अपनी एक छोटी सी पुश्तैनी खेती योग्य जमीन थी। वह शहर जाने से पहले उस भूमि पर खेती भी करते थे। वह जमीन काफी दिनों से बेकार पड़ी हुई थी। अब उसी भूमि पर मोहन के पिता ने खेती करना आरंभ किया और विभिन्न प्रकार के सब्जियों को उसमें उगाना आरम्भ कर दिया। वह पहले भी खेती कर चुके थे, इसलिए उन्हें खेती करने का अनुभव था। उसका परिणाम यह हुआ कि खेती से पर्याप्त मात्रा में सब्जी निकलने लगी। उसे वह बाजार में ले जा करके बेचने लगे।

उधर मोहन की माँ कपड़ों की सिलाई कढ़ाई करना जानती थी। जब वह गाँव वापस आई थी, तो अपने संग अपनी सिलाई मशीन भी ले आई थी। उसने देखा कि गाँव के आसपास मास्क की कमी है, तो उन्होंने उसे सिल कर कम कीमत पर बेचना आरंभ कर दिया। इससे आसपास के क्षेत्र में मास्क की कमी पूरी होने लगी और उसे एक निश्चित आय भी मिलने लगी। इस कार्य को करने से उसे अपने काम को आगे बढ़ाने में मदद होने लगी और वह अन्य प्रकार के कपड़े भी सिलने लगी।

कुछ समय बाद जब विद्यालय का नया सत्र आरम्भ हुआ तो मोहन के पिता ने उसका पास के प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश दिला दिया। इस प्रकार से कोविड के कारण उत्पन्न चुनौती का उसके माता पिता ने अपनी समझबूझ और धैर्य से सामना किया। उन्होंने भविष्य में शहर न जाने का निर्णय लिया और अपने गाँव में रह करके अपना कारोबार करने लगे।

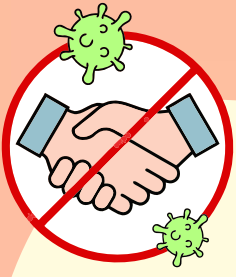






# नया अवसर

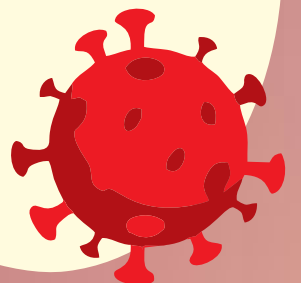


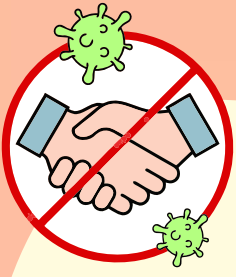


रामप्रकाश एक प्राइवेट स्कूल में शिक्षण कार्य करते थे। उनका स्कूल छोटा ही था। उसमें कुल सौ के करीब छात्र पढ़ते थे। रामप्रकाश के घर में उनकी पत्नी एवं दो छोटे-छोटे बच्चों के अतिरिक्त उनके माता-पिता भी थे। उनके पिता कभी कभी बीमार भी रहते थे। उनकी देखभाल की जिम्मेदारी रामप्रकाश की ही थी। रामप्रकाश इसे बहुत ही ध्यान दे करके करते भी थे। इस तरह कुल मिलाकर उनका जीवन सही प्रकार से गुजर रहा था। इसी बीच कोविड के कारण सरकार ने देश में लॉकडाउन घोषित कर दिया। इस कारण से अन्य जगहों के साथ रामप्रकाश का स्कूल भी बंद कर दिया गया। यह एक प्राइवेट स्कूल था। इसलिए स्कूल में मिलने वाला शिक्षण शुल्क भी रुक गया। इसका परिणाम यह हुआ कि रामप्रकाश को वेतन भी मिलना भी बंद हो गया। यह एक ऐसी स्थिति थी, जिसके लिए रामप्रकाश ने पहले से कोई भी तैयारी नहीं की थी।

वेतन के न मिलने के कारण पूरे परिवार पर घोर संकट आ खड़ा हुआ। इस स्थिति का सामना करने के लिए पहले तो रामप्रकाश ने बैंक में जमा कुछ पैसे निकाले। इसके समाप्त होने के बाद वे कुछ पैसे इधर उधर से माँगे। किंतु इस प्रकार से माँग करके घर काफी दिनों तक नहीं चल सकता था। इस बात को रामप्रकाश समझ चुके थे। रामप्रकाश यह भी जानते थे कि लोगों से उधार पैसा माँगना कोई बहुत अच्छी बात नहीं है। आखिर उसे वापस भी करना होगा। उन्होंने तय किया कि आगे की व्यवस्था के लिए कुछ उपाय करने की सख्त आवश्यकता है। वह इस पर विचार करने लगे।

तभी रामप्रकाश को ध्यान आया कि उनका एक साथी लोगों को मोबाइल पर आनलाइन पढ़ाता है। रामप्रकाश इसके बारे में काफी पहले से सुने थे। किन्तु वह उसके बारे में काफी कुछ बातें नहीं जानते थे। वह यह भी सुने थे कि उसका साथी मोबाइल पर पढ़ा करके पैसा भी कमाता है। अब रामप्रकाश के मस्तिष्क में यही बात घूम रही थी कि क्यों न वह भी यह काम करें। किन्तु इस कार्य को कहाँ से और कैसे



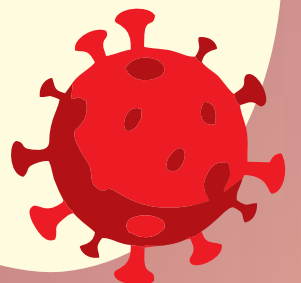


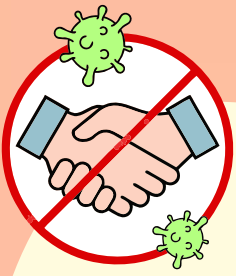
आरम्भ करना है, इसके बारे में उन्हें कुछ भी ज्ञात नहीं था। तब उन्होंने सोचा कि क्यों न वह अपने दोस्त से ही इसके बारे में बातचीत करे। उन्होंने अपने उस दोस्त को फोन मिला कर सारी बातें बतायीं।

उनके दोस्त ने यह जान कर बहुत ही खुशी जाहिर किया। वह दोस्त छात्रों को गणित पढ़ाता था। उधर रामप्रकाश भौतिकी विषय के शिक्षक थे। राम प्रकाश को उन्होंने सब कुछ बताया, इसी के साथ उन्होंने यह भी सलाह दी कि वह पहले अपना कुछ लेक्चर वेब माध्यम पर पोस्ट कर दें जिससे कि छात्रों को उनके बारे में जानकारी मिल जाये।

रामप्रकाश ने सोचा कि जब वह कक्षा में पढ़ा सकते हैं तो ऑनलाइन पढ़ाने में क्या हर्ज है। उन्होंने भौतिकी विषय पर अपना एक लेक्चर मोबाइल पर रिकार्ड किया और उसे पोस्ट कर दिया। वह काफी असमंजस में थे कि पता नहीं लोग उसे पसन्द करेंगे कि नहीं करेंगे। किन्तु उनकी आशंका निर्मूल साबित हुई। रामप्रकाश के भौतिकी विषय पर दिये गये लेक्चर को बहुत बड़ी संख्या में छात्रों ने सुना और उसे काफी पसन्द किया।

रामप्रकाश के लेक्चर को बड़ी संख्या में छात्रों द्वारा लाइक किये जाने से उनका उत्साह बढ़ गया और उन्होंने भौतिकी विषय के कई टॉपिक पर एक-एक करके अपने लेक्चर को रिकार्ड किये और उसे यूट्यूब पर पोस्ट किया। इसका उन्होंने एक बहुत ही आकर्षक नाम भी रख दिया। इन सभी लेक्चर को देखने वालों की संख्या धीरे धीरे हजारों में पहुँच गयी। इससे रामलाल को काफी प्रशंसा मिली और सभी लोगों ने उस लेक्चर को पसंद किया। इस तरह से बच्चों को बीच में उसकी लोकप्रियता काफी बढ़ गई।



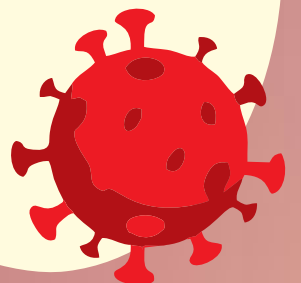


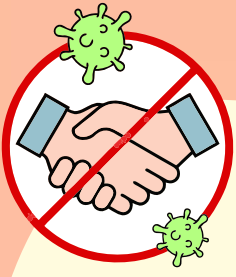
अब रामप्रकाश यह समझ गए कि जिस प्रकार से अन्य लोग ऑनलाइन पोस्ट करके आय प्राप्त करते हैं, उसी तरह से अब वह भी पैसा आय प्राप्त कर सकते हैं और इसके लिए वह प्रयास करना शुरू कर दिए। आरम्भ में उन्हें थोड़ी समस्या का सामना करना पड़ा, क्योंकि उनका तकनीकी ज्ञान बहुत अच्छा नहीं था। से वह यह भी बहुत अच्छी प्रकार से नहीं जानते थे कि अपने लेक्चर को कैसे वह आय के साधन के तौर पर विकसित करें।

पर कहते हैं कि जहाँ चाह है, वहाँ राह है। रामप्रकाश अपने कार्य करने के प्रति काफी दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उन्होंने ठान लिया था कि वह अपने कार्य को अवश्य ही आगे बढ़ाते रहेंगे। इसलिए उसके लिए रास्ता भी बनता गया। तकनीक के बारे में काफी बातें तो आनलाइन माध्यम पर ही बतायी गयी थी। वे इसके लिए सतत् प्रयास करते रहे और इससे उनकी तकनीकी क्षमता भी लगातार बढ़ती गयी। इससे उनका उत्साह बढ़ता जाता था। अब वे अपने लेक्चर को काफी सुन्दर ढंग से बनाने का तरीका सीख लिए।

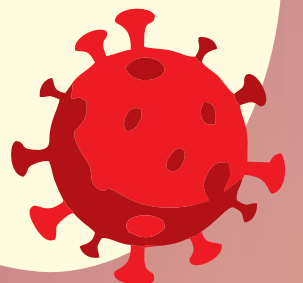
धीरे धीरे रामप्रकाश भौतिकी विषय पर कई लेक्चर पोस्ट कर चुके थे। रामप्रकाश के लेक्चर सुन करके उनके पास छात्रों के फोन भी आने लगे और बहुत से बच्चों ने उनसे भौतिकी विषय को ऑनलाइन पढ़ने की इच्छा जाहिर किये। रामप्रकाश में भी अब काफी आत्मविश्वास जाग गया था। वे अपनी कक्षा लेने के लिए जैसे ही आनलाइन माध्यम पर फार्म भरने की जानकारी दी तो फिर काफी बड़ी संख्या में छात्रों ने इसके लिए आवेदन किया।

इस तरीके से रामप्रकाश को पढ़ाने के लिए काफी बच्चे मिल गए और उन्होंने एक ग्रुप बना करके उन बच्चों को पढ़ाने लगे। वे अपने इस काम में धीरे-धीरे काफी सुधार कर लिया। वह अपने आनलाइन कक्षा के लिए एक निश्चित शुल्क भी निर्धारित कर दिया। इससे उनकी आर्थिक समस्या कुछ कम हुई। उन्होंने बहुत ही कम शुल्क ले करके शिक्षण कार्य करते थे, इससे उनका छात्रों में सम्मान भी काफी अधिक था।





और समय के साथ ही जैसे जैसे बच्चों की संख्या बढ़ती गई, उनकी आर्थिक समस्या और भी कम होती गई। इस कोविड ने रामप्रकाश को एक ऐसा अवसर प्रदान किया कि अपने घर पर बैठकर ही बड़ी संख्या में विभिन्न कक्षाओं के माध्यम से पैसा कमाना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार कोविड आपदा को रामप्रकाश ने एक अवसर के तौर पर विकसित कर दिया।





# भूल का प्रायश्चित

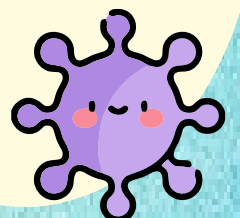
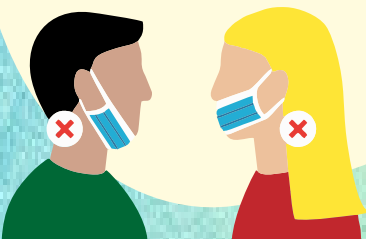




करोना बीमारी के कारण से सारे क्रिया कलाप ठप्प हो गए थे। बीमारी के फैलने के भय और आशंका के कारण सभी लोग काफी दहशत में थे। इससे बचने के लिए वे सभी प्रकार के उपाय कर रहे थे। करोना बीमारी की दूसरी लहर को देखते हुए इस बात की पूरी आशंका थी कि किसी भी समय लॉक डाउन की घोषणा की जा सकती है। अतः सभी लोग बहुत जरूरी सामान को खरीद करके घर पर रख लेना चाह रहे थे, जिससे कि यदि लॉकडाउन की घोषणा की जाए तो किसी प्रकार की कोई समस्या न हो। इस दौरान करोना से बचने के लिए जब लोग कहीं भी जाते थे तो सबके पास हमेशा सेनीटाइजर रहता था, जिससे कि किसी भी अनजान व्यक्ति से सम्पर्क हो जाने पर वह तुरंत हाथ को सेनीटाइज कर सके।

इसी बीच रामकृष्ण बहुत जरूरी काम से बाजार जाना पड़ गया। टीवी और अन्य मीडिया पर इस बीमारी के फैलने का समाचार लगातार आ रहा था। टीवी पर इस बात को भी बताया जा रहा था कि कहीं भी जाने से पहले सब तरह की सावधानी अपनानी आवश्यक है। इसी के साथ साथ इससे बचने के लिए कई प्रकार के उपाय भी बताये जा रहे थे। इसमें काढ़ा पीने की बात भी कही जा रही थी। रामकृष्ण को काढ़ा बनाने के सामान के साथ साथ खान पान की कई अन्य वस्तुएं खरीदनी थी। वह कई दुकानों पर गए। किसी भी दुकान पर सभी सामान नहीं मिल पाया। सब दुकानों पर काफी खरीदारी चल रही थी। सभी लोग सामान ले लेना चाहते थे। उन्हें कहीं पर एक सामान मिला तो कहीं पर दूसरा सामान प्राप्त हुआ। कई दुकानों में जाने पर किसी प्रकार से उन्हें सब सामान प्राप्त हुआ तो फिर वह उन सबको ले करके घर के लिए रवाना हुए।

इस पूरे भाग दौड़ के दौरान रामकृष्ण मास्क लगाना भूल गए। जब यह घर पहुँचे तो उनकी पत्नी ने पूछा कि मास्क नहीं लगाए हैं। तब उन्हें ख्याल आया कि वह पूरे बाजार बिना मास्क के ही घूम आए हैं। इसी बीच वह हाथ सेनीटाइज करने के लिए पाकेट से सेनीटाइजर की शीशी निकालना चाहे, तो ज्ञात हुआ कि वह तो सेनीटाइजर की शीशी

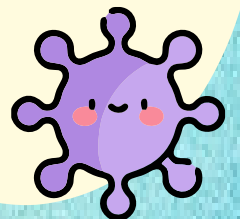
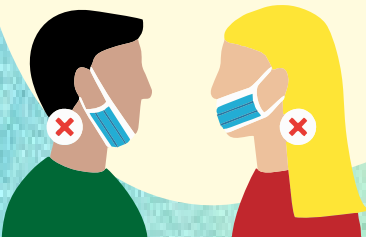




भी घर पर ही छोड़ गए थे। अब उन्हें ध्यान आया कि जब वे बाजार गये थे तो सैनीटाइजर ले जाना भूल गये। तब इसका मतलब यह हुआ कि बाजार में जगह जगह जा करके सामान खरीदने के दौरान कहीं भी वह हाथ को सैनीटाइज भी नहीं किए हैं। अब तो उन्हें काफी घबराहट होने लगी। पूरे बाजार घूमने के दौरान उन्होंने सोशल डिस्टेंस का भी ध्यान नहीं दिया। कई लोगों से तो वह बहुत ही करीब हो करके बातचीत किये। अजीब बात थी कि अन्य लोग भी इसका ध्यान नहीं दिये। उनका एक दोस्त बाबूलाल तो उनसे बार बार हाथ भी मिलाता रहा।

उनको परेशान देख कर उनकी पत्नी ने कहा कि आप परेशान मत होइए। अभी आप अपने सारे कपड़े उतार कर स्नान कर लीजिए। कपड़ों को तो अभी ही धो दिया जायेगा। मैं अभी पानी में नमक डाल करके देती हूँ। आप सबसे पहले नमक पानी का गरारा कर लीजिए। आप रोज सुबह शाम तो गरारा करते ही हैं। आज एक बार फिर अभी कर लीजिए और अपने कपड़े सभी तुरंत बदल दीजिए, नहीं तो इससे वायरस के फैलने का डर रहेगा। रामकृष्ण तुरंत अपने कपड़े उतार करके स्नान किए और फिर नमक पानी का गरारा किए। उन्होंने नाक में तेल भी लगाया। उनकी पत्नी उनके लिए काढ़ा तैयार करने लगी। इसके बाद पत्नी ने उनसे कहा कि अब आपको चौदह दिन की तपस्या करनी होगी।

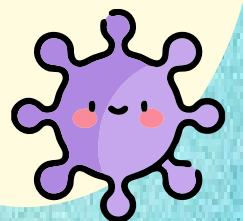
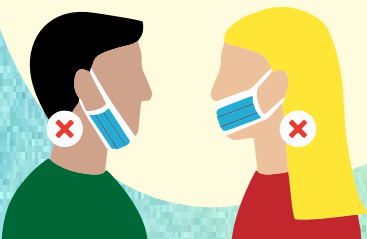
रामकृष्ण बात को समझ नहीं पाए। तब उनकी पत्नी ने बताया कि अगर किसी व्यक्ति को इस बात की आशंका हो कि वह कहीं ऐसी जगह पर चला गया था, जहाँ कोरोना वायरस से संक्रमित होने की आशंका है तो कम से कम चौदह दिन तक उसे अपने घर में स्वयं को आइसोलेट कर लेना चाहिए, जिससे कि यदि कोविड बीमारी के होने की आशंका है, तो इसी बीच उसके लक्षण प्रकट हो सकते हैं अन्यथा वह व्यक्ति पूरी तरह से स्वस्थ माना जाता है। यह सुनकर के रामकृष्ण को पहले तो काफी उलझन हुई। किंतु यह सब कोरोना बीमारी से बचने की बात थी, जिससे कि घर में बच्चे एवं अन्य लोग भी कोरोना बीमारी संक्रमित न हो। अतः इसका पालन करना आवश्यक था।





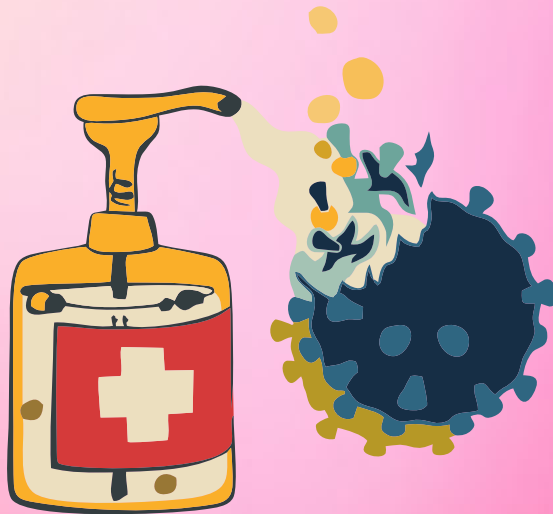


अब रामकृष्ण अगले चौदह दिन तक घर में एक अलग कमरे में आइसोलेट हो करके रहने लगे। इस दौरान वह सबसे अलग रहे उनके खान पान और उपयोग की सारी वस्तुएं अलग रखी गयी। अब कोई उनके करीब नहीं जाता था। स्वयं रामकृष्ण इन सब बातों को काफी ध्यान देते थे। यह बहुत बड़ी गनीमत रही कि चौदह दिन में उनको इस बीमारी का कहीं कोई लक्षण नहीं हुआ। किंतु अपनी भूल का उनको जबरदस्त तरीके से पश्चाताप करना पड़ा और उन्हें आगे हमेशा के लिए यह याद हो गया कि जब भी कहीं जाए तो मास्क लगा करके जाए एवं सेनीटाइजर अपने पास रखें और हमेशा सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें।





# कोविड सूचना केंद्र

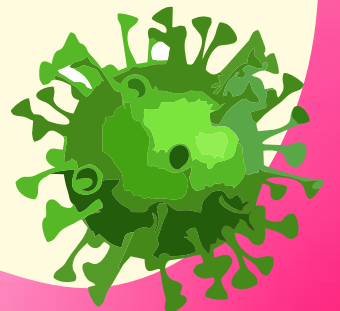
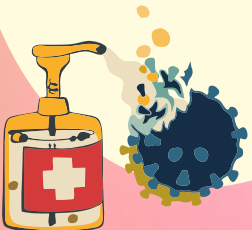




कोविड बीमारी के कारण से समाज के सभी लोग बहुत ही परेशान हो रहे थे। किंतु इसमें ऐसे भी लोग थे जो कि इस बीमारी का सामना करते हुए लोगों की मदद भी कर रहे थे। कोई किसी की आर्थिक मदद कर रहा था, तो कोई किसी को भोजन बना करके दे रहा था। बहुत से लोग खाना बना कर उन मजदूरों को खिला रहे थे जो कि दैनिक रूप से मजदूरी करके अपना जीवन यापन करते थे, कुछ छात्र वाट्सएप पर समूह बना करके लोगों की मदद कर रहे थे। वे लोगों के बारे में पता लगा जगह जगह जा करके उनकी मदद करते थे। लॉकडाउन के कारण से सभी क्रियाकलाप ठप्प हो जाने से कई मजदूर भूखमरी के शिकार हो रहे थे। बहुत से लोग मास्क भी वितरित कर रहे थे। इसी तरह से कुछ लोग जगह जगह कैम्प लगा करके सैनीटाइजर की छोटी छोटी शीशी या बोटल ले करके लोगों को बाँट रहे थे।

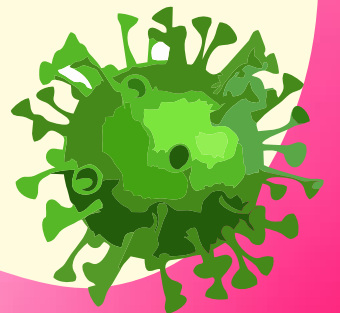
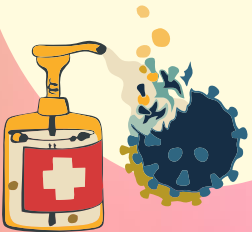
इस प्रकार से विभिन्न कठिनाइयों का सामना करते हुए भी लोगों की मदद करने के क्रियाकलाप के टीवी पर लगातार समाचार दिये जा रहे थे। इसे देख करके बालक राजेश भी लोगों की मदद करना चाह रहा था। लोगों की मदद करने के लिए वह परेशान था। किन्तु उसे कोई ऐसा रास्ता नहीं सूझ रहा था, जिससे कि वह लोगों की मदद करें। वह एक तरफ देखता था कि टीवी में लोगों के बारे में समाचार आ रहा था कि कैसे वे विभिन्न प्रकार के समस्याओं का सामना कर रहे हैं। वही बहुत से लोग सही सूचनाओं के न मिल पाने से भी काफी परेशान हो रहे हैं। इस कारण से उन्हें विभिन्न विषयों के बारे में सही निर्णय लेने में भी दिक्कत हो रही है। सरकार लोगों तक सही सूचना देने के लिए लगातार प्रयास कर रही थी। वह विज्ञापन से ले करके प्रेस विज्ञापित, इन्टरव्यू आदि के माध्यम से दे सूचना रही थी।

इस दौरान राजेश ने यह पाया कि बहुत से लोग गलत खबरें पैदा करके समाज में समस्याएं पैदा कर रहे थे और लोगों को गुमराह करने का भी काम कर रहे थे। इससे लोगों को भयानक समस्या का सामना करना पड़ रहा था।



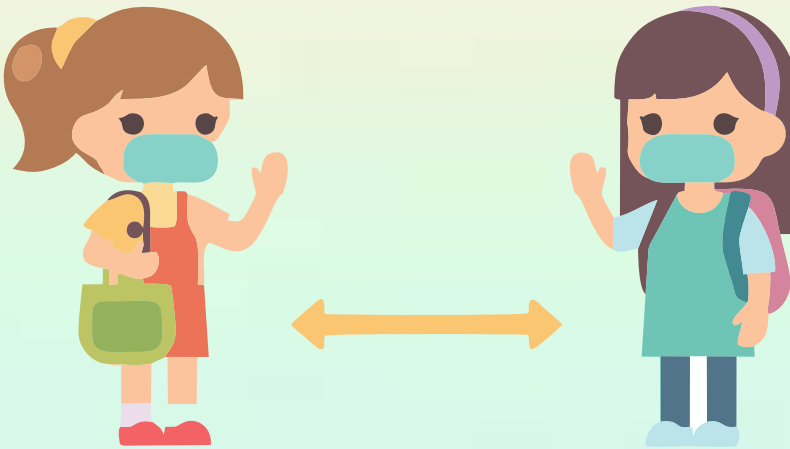


उसने सोचा कि क्यों न एक ऐसी वेबसाइट बनाई जाए जिस पर कि सभी प्रकार की सही सूचनाओं को पोस्ट किया जाए और आम नागरिकों को सरकार जो भी बातें बताती हैं या बताना चाहती है, उन बातों को भी इस वेबसाइट पर सही तरीके से प्रस्तुत किया जाए। इस पर सरकार की महत्वपूर्ण वेबसाइट के लिंक भी दिये जाये। उसने यह भी तय किया कि जितनी भी फर्जी समाचार आते हैं, उनके बारे में स्पष्टीकरण भी दिये जाने की आवश्यकता है। उसे लगा कि यह एक ऐसा कार्य जिससे कि वह लोगों की सेवा कर सकता है। यह विचार आते ही राजेश एक वेबसाइट बनाना आरंभ कर दिया। वह वेबसाइट बनाने के बारे में अच्छी जानकारी रखता था। उसने तुरंत कोविड सूचना केंद्र नाम की एक वेबसाइट का निर्माण किया। उस साइट का पंजीकरण कराने के बाद सरकार और सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा बीमारी के संदर्भ में दिए गए सूचनाओं को बहुत ही सरल तरीके से उस पर पोस्ट कर दिया। वह समय-समय पर जो भी सूचनाएं आती थी, उसको उस पर वह पोस्ट करता चला जाता था। इसी के साथ वह अफवाह के बारे में भी लोगों को बतलाता जाता था, जिससे कि सब लोग उसके झांसे में किसी भी प्रकार से न आयें। इस वेब साइट के लिंक को सब जगह पर शेयर भी करने लगा। अब लोगों को कोविड के बारे में सही तरीके की जानकारी मिलने लगी। धीरे-धीरे उसको देखने वालों की संख्या बढ़ने लगी। राजेश को अब इस बात की बड़ी संतुष्टि थी कि उसने भी कोरोना बीमारी के दौरान लोगों की मदद करने की अपनी इच्छा को पूरा कर लिया।





# कोविड ज्ञान प्रतियोगिता

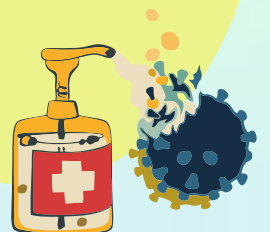
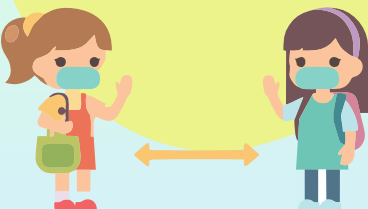




कोविड बीमारी से बचने के लिए विभिन्न माध्यमों से बच्चों के बीच कोरोना वायरस और कोविड बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए भी काफी जानकारी दी जा रही थी। विभिन्न जनमाध्यम इस समय लगातार कोविड से बचने के उपाय के बारे में चर्चा कर रहे थे। इसमें मास्क पहनना, सैनीटाइजर का प्रयोग करना, भीड़-भाड़ से बचने जैसी बातों की चर्चा तो करते ही थे, इसी के साथ साथ ही लोगों को मानसिक रूप से कोविड बीमारी से लड़ने के लिए भी सभी प्रकार के उपाय बताये जा रहे थे। सभी लोगों को यह भी बताया जा रहा था कि उन्हें अपने समय का कैसे सही तरीके से उपयोग करना चाहिए और उन्हें अपने भीतर सकारात्मक विचार रखना चाहिए। उनको खान पान के बारे में भी तरह-तरह की जानकारी दी जा रही थी। पौष्टिक और संतुलित भोजन को अपनाने और काढ़ा पीने के लिए भी लोगों को बताया जा रहा था, जिससे कि लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़े और वे कोविड बीमारी का सफलतापूर्वक सामना कर सकें। इसी के साथ नमक पानी का गरारा करने और योग करने के लिए भी विभिन्न प्रकार के आसन की जानकारी दी जा रही थी।

इसी बीच सरकार ने बच्चों के बीच में कोविड के बारे में जागरूकता की जानकारी प्राप्त करने का निर्णय लिया। इस सन्दर्भ में यह तय किया गया कि बच्चों में कोविड के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एक प्रतियोगिता आरम्भ किया जाये।

उसने इस संदर्भ में एक वेबसाइट तैयार कराया। उस पर पहले बच्चों का पंजीकरण कराया गया और इस पर सभी प्रकार की जानकारियां भी दी गई थी कि इस प्रतियोगिता में किस प्रकार के प्रश्न पूछे जाएंगे। आशीष ने भी इस वेबसाइट पर अपना नाम पंजीकरण करा दिया था। कोविड के दौरान वह घर पर रह करके अपनी कक्षा की पढ़ाई के साथ-साथ कोविड के बारे में भी विभिन्न प्रकार की जानकारियां लगातार प्राप्त करता रहा। वह कोविड के बारे में ऐसे स्रोतों से जानकारी प्राप्त करता था, जिसे सरकार ने मान्यता दी थीं। वह आरोग्य सेतु, पीआइबी और इसी प्रकार की अन्य स्रोतों का अध्ययन करके सही बातों की जानकारी प्राप्त किया।

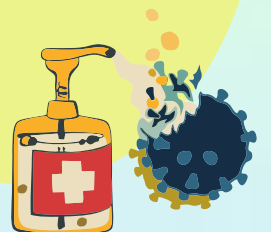
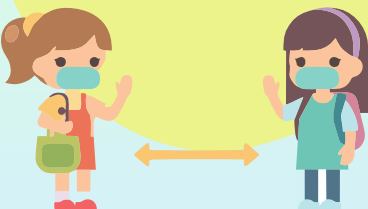




इस प्रकार से पूरे कोविड काल के दौरान इसके विभिन्न पक्षों के बारे में अच्छी खासी जानकारी प्राप्त कर ली थी। अब उसे पता था कि कोविड की उत्पत्ति कहाँ हुई और इसके वायरस से कैसे नुकसान होता है तथा किस प्रकार से लोग संक्रमित होते हैं और उससे बचने के लिए क्या किया जाना चाहिए। कोविड बीमारी से बचने के लिए सरकार एवं अन्य विश्वसनीय सूचना केन्द्रों से ही वह जानकारी प्राप्त करता था। इससे कोविड के बारे में उसे काफी जानकारी हो गयी।

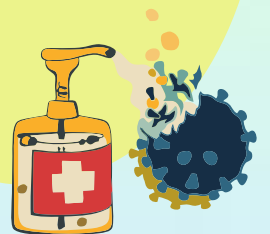
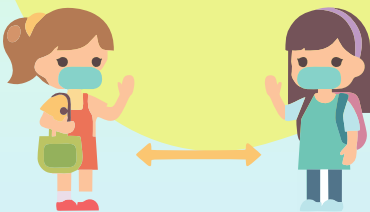
उसे भी पता हो गया था कि यदि कोई व्यक्ति इस बीमारी से संक्रमित हो गया है तो उस स्थिति में किस प्रकार की सावधानी अपनाई जानी चाहिए और यह संक्रमित होने के पश्चात जब वह स्वस्थ हो गया है तो उस स्थिति में किस प्रकार की सावधानी अपनानी चाहिए। कोविड टीका के बारे में भी वह सब प्रकार की सूचनाएं प्राप्त कर ली थी। इस प्रकार से सारी तैयारी करने के कारण आशीष में काफी आत्मविश्वास हो गया था। इस प्रतियोगिता में आशीष ने पूरी उत्साह और तैयारी के साथ भाग लेने का निर्णय लिया।

कोविड जागरूकता प्रतियोगिता परीक्षा के निर्धारित दिन आशीष पूरे जोश और उत्साह के साथ कंप्यूटर के समक्ष बैठ करके परीक्षा शुरू होने का इंतजार करने लगा। जब निर्धारित समय पर परीक्षा शुरू हुई तो आशीष को यह देख करके बड़ा सुखद आश्चर्य और आनंद हुआ कि उसने जो तैयारी की थी, उसका फल उसे दिख रहा था। इस प्रकार की अच्छी तैयारी के कारण उसे कोविड प्रतियोगिता में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देने में कोई दिक्कत नहीं हो रही थी। वह बहुत आसानी से सभी प्रश्नों का उत्तर दे रहा था। इसमें अधिकतर प्रश्न कोविड होने के कारण, उसके लक्षण और इससे बचने के उपाय, सही खान पान और टीका के बारे में पूछे गये थे। उसने बहुत ही धैर्य के साथ सभी प्रश्नों का उत्तर दिया। जब परीक्षा समाप्त हुई तो उसे काफी आत्म सन्तोष महसूस हो रहा था। किन्तु इसी के साथ उसे यह भी महसूस हो रहा था कि उसे यह आसान इसलिए लगा, क्योंकि उसने इसकी काफी तैयारी की थी।





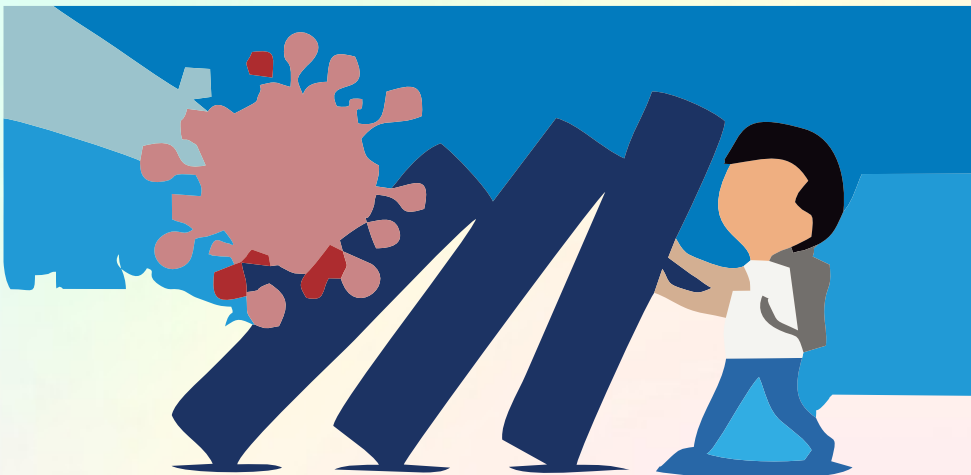
इस प्रतियोगी परीक्षा के समाप्त होने के साथ ही आशीष को यह विश्वास हो गया था कि वह परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त करेगा। हालांकि उसे प्रतियोगी परीक्षा के कारण कुछ आशंका भी हो रही थी। जब तक प्रतियोगी परीक्षा का परिणाम नहीं घोषित किया गया, आशीष बहुत ही बेसब्री से उसका इन्तजार करता रहा। कुछ ही दिनों बाद इस परीक्षा का परिणाम सामने आया और उसमें आशीष सबसे सफल प्रतिभागी के रूप में घोषित किया गया। जब यह जानकारी उसको मिली तो उसे असीम आनंद हुआ और उस बीमारी के प्रति इतनी अच्छी जानकारी के लिए आशीष को सरकार की तरफ से पुरस्कृत किया गया और उसे एक जागरूक छात्र के रूप में घोषित कर उसे इसका सर्टिफिकेट भी दिया गया। इस प्रकार आशीष को अपने मेहनत का फल मिल गया।





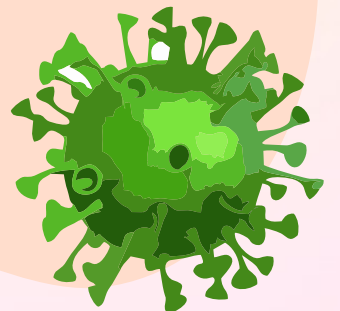
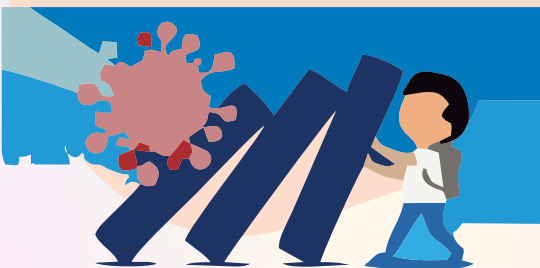


# दूसरी लहर की सजा





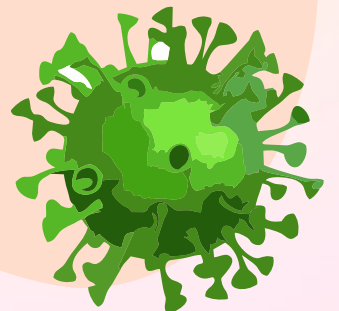
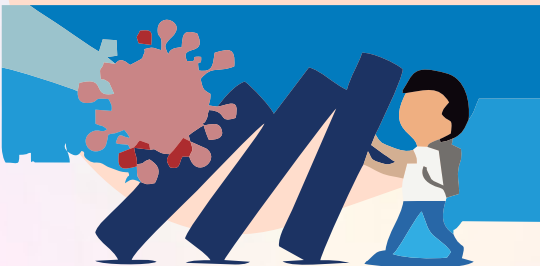
जैसे ही कोरोना का मामला थोड़ा कम हुआ, सभी लोग निश्चित हो करके इधर उधर घूमने लगे। भग्गु भी आजकल मास्क नहीं लगाते थे। आज तो बाजार भी गये थे। वहाँ पर वह काफी देर तक बिना मास्क लगाये इधर उधर घूमते रहे और विभिन्न दुकानों पर जा करके खरीदारी की। शाम में घर आने पर वह काफी थके हुए थे। इसलिए खाना खा करके जल्दी ही सो गए। वे अभी सोए ही थे कि उन्हें नींद में दूर गाड़ियों की ध्वनि सुनाई दी। ऐसा लग रहा था कि मानों काफी हल्ला गुल्ला हो रहा है। वह चौंक गये और फिर एकाएक उठ करके बैठ गए। उनके घर के सामने कई गाड़ियाँ आ करके रुक गयीं। यह सब देख भग्गु काफी डर गये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर माजरा क्या है। उन्होंने देखा कि कुछ लोग उनकी तरफ ही लपके हुए बहुत ही तेजी के साथ चले आ रहे हैं। उसमें डॉक्टर, नर्स और कई सिपाही भी थे। उन्हें देखकर वे बहुत घबड़ा गए। अभी वे उनसे कुछ पूछने वाले थे कि उसमें से सिपाही ने उससे पहले ही जोरदार आवाज में उन्हें अपने साथ चलने के लिए कहा। भग्गु तो बहुत ही डर गये गये। उनकी घिघी बँध गयी। वे डरते हुए पूछे- लेकिन उन्हें क्यों चलने के लिए कहा जा रहा है ? इस पर सिपाही ने उनको जोर से डाँटा और कान उमेठ कर बोला कि -तुम बाजार में घूम रहे थे। यह तुम्हें याद है ? पूरे बाजार बिना मास्क के इधर उधर टहलते रहे। यही तुम्हारा अपराध है। इसके बाद डॉक्टर ने कहा कि - तुम बिना मास्क के ही बाजार में घूम रहे थे। इससे तुम अन्य लोगों को और स्वयं को खतरे में डाला। अब तुम्हें चौदह दिन के लिए अस्पताल में कोरेंटाइन में रहना होगा। फिर वहीं पर जाँच होगी और सभी प्रकार की दवाएं भी होगी, क्योंकि तुम्हें कोविड हो सकता है। यह बातें सुनकर के भग्गु एकदम रुआँसे हो गए। उन्हें सिपाही और डॉक्टर दोनों की बातें सही लगी, किंतु वह गलती कर बैठे थे। अब वे उन दोनों से माफी माँगने लगे। दोनों ने जोर से डाँट कर कहा कि कोरोना में माफी माँगने से काम नहीं बन सकता है। तुम कानून नहीं मानते हो और वे उन्हें पकड़कर बाहर ले जाने लगे। अब तो भग्गु जोर-जोर से चिल्लाने लगे। 'मुझे माफ कर दो', 'मुझे माफ कर दो' की वह लगातार रट लगाए जा रहे थे। धीरे धीरे यह आवाज तेज होती जा रही थी। उनकी चिल्लाहट सुन करके घर





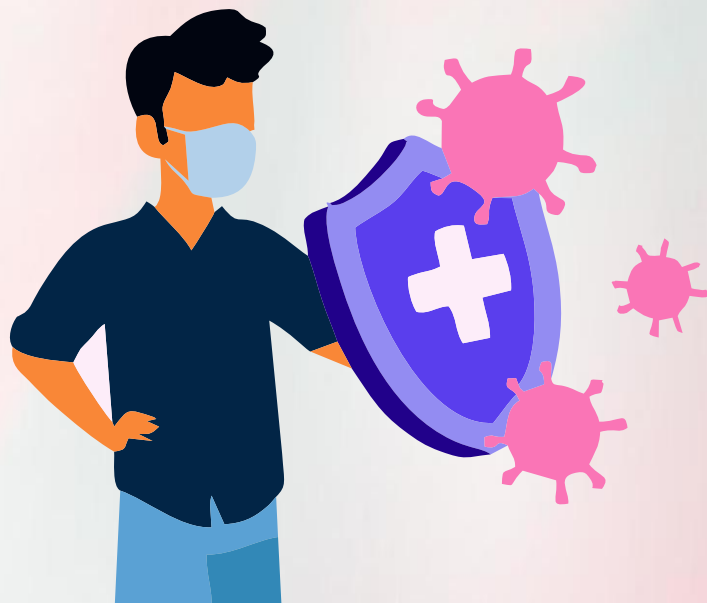
के सभी सदस्य जग गये और वे उनके पास दौड़ करके आ गये और उनको जगा करके पूछने लगे, क्या हुआ ? क्या हुआ ? ये आवाजें सुनने के बाद भग्गु की नींद खुल गयी। उस समय वह जोर जोर से हॉफ रहे थे और डरे हुए दिख रहे थे। उन्होंने उन सबको पूरी बात बताई और यह भी बताया कि उन्हें सिपाही जबरदस्ती पकड़ करके ले जा रहे थे। यह सुन उनके घर के लोगों ने राहत की सांस ली। फिर वे सब लोग हँसने लगे और कहे कि आखिर बिना मास्क लगाये वह क्यों बाजार में घूम रहे थे।

किन्तु भग्गु अब यह समझ चुके थे कि यह भले ही सपना हो, किन्तु उन्होंने गलती की थी और ऐसी गलती का इस प्रकार से खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ सकता है। इसलिए भविष्य में उन्हें हमेशा सावधान रहने की आवश्यकता है और जब कभी भी बाहर जाएं तो मास्क पहन कर के जाना होगा और सैनिटाइजर को अपने पास रखना होगा। उन्हे भीड़ भाड़ के करीब कभी नहीं जाना होगा और सबसे दूरी बना करके ही रहना होगा। इन सारी बातों की कसम खाते हुए वे एक बार फिर सो गये।





# दोस्त के दर्द का एहसास

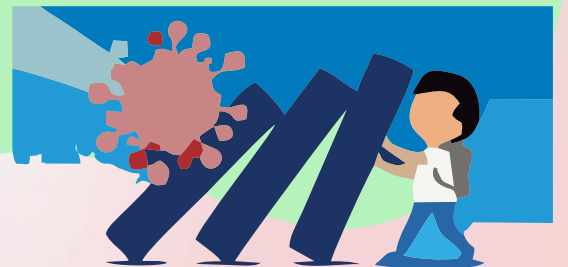
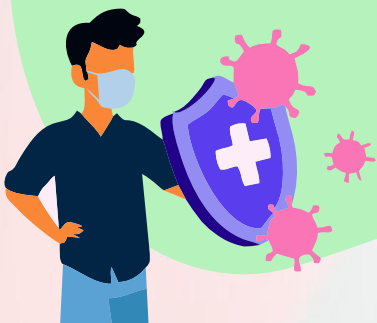




एक लंबे समय के बाद जब विद्यालय के खुलने की घोषणा हुई तो वेद को खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह सोचा कि एक बार फिर पहले की तरह विद्यालय की चहल-पहल और रौनक वापस आ जाएगी। वह वहाँ पर अपने दोस्तों के साथ पढ़ने के अतिरिक्त खेलकूद भी करेगा। जिस दिन वेद को स्कूल जाना था, उस दिन वह सवेरे उठकर सभी तैयारी पूर्ण कर लिया और अब वह जल्दी से जल्दी विद्यालय पहुँच जाना चाहता था। उसकी माँ ने उसे समझाया कि इस समय कोरोना वायरस के कारण काफी सावधानी बरती जा रही है। विद्यालय द्वारा भी ये सब बातें और सावधानियाँ अपनाने के लिए कहा गया है। उसे मास्क लगाकर पर ही जाना है और हमेशा सैनिटाइजर अपने पास रखना है, जिससे कि यदि कहीं पर कोई भी अनजान वस्तु या सतह पर स्पर्श हो जाए तो उसे सैनीटाइज कर लेना चाहिए और सब लोगों से दूरी बनाकर के रहना चाहिए।

वेद का स्कूल से घर से बहुत दूर नहीं था। किन्तु अति उत्साह के कारण आज वह काफी पहले ही घर से निकल जाना चाहता था। उधर उसकी माँ उसे काफी पहले घर से निकलने के लिए लगातार मना कर रही थी। फिलहाल तय समय से पहले ही वह घर से विद्यालय के लिए प्रस्थान किया। कुछ ही समय बाद उसका स्कूल दिखाई देने लगा। वह उम्मीद कर रहा था कि पहले की तरह विद्यालय के बाहर काफी गहमा गहमी होगी। किंतु जैसे जैसे वह स्कूल के समीप पहुँचता गया, उसे काफी निराशा महसूस होने लगी थी। विद्यालय के बाहर बहुत ही कम छात्र दिखाई दे रहे थे। कहीं कोई गहमा गहमी नहीं थी। ऐसा लग रहा था कि विद्यालय के सभी छात्र आये भी नहीं थे।

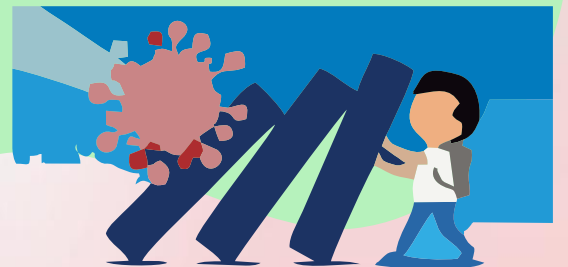
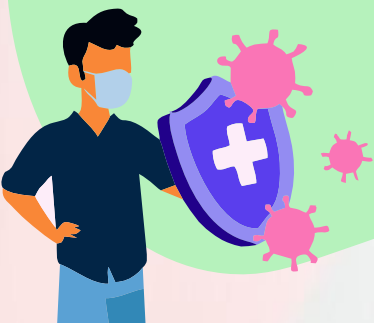
वेद जब स्कूल के अंदर प्रवेश करने लगा तो गेट पर ही चपरासी ने तो उसे मास्क न लगाने के लिए टोका। तो फिर वह तुरंत पाकेट से मास्क निकाल करके उससे नाक मुँह ढक लिया। फिर उसके बाद चपरासी ने उसका तापमान देखा और फिर सामने रखे सैनीटाइजर को हाथ में लगाने के लिए कहा गया। इसके बाद वह विद्यालय में प्रवेश किया।





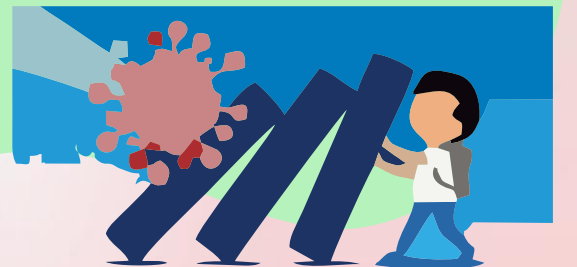
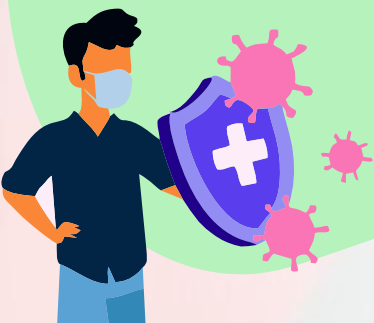
आज पहली बार वेद को स्कूल में काफी सूनापन महसूस हुआ था। उसे अपने दोस्त पुराण की बार-बार याद आ रही थी। वह सोच रहा था कि यदि वह मिल जाता तो कितना अच्छा होता। इधर उधर उसकी तलाश में वेद की निगाहे दौड़ रही थी। तभी उसके बगल में कुछ दूरी से एक आवाज आई। वह चौंक करके पीछे देखा तो पुराण खड़ा था। अब वेद उसे देखकर खुशी से उछल पड़ा। अब उसे लगा कि उसका दोस्त मिल गया है। किंतु पुराण बहुत ही शांत भाव से खड़ा था। बार-बार पूछने पर उसने बताया कि कोरोना बीमारी से पिताजी की मृत्यु हो गयी। यह सुनकर वेद के पैर के नीचे से जमीन खिसक गयी। उसे काटो तो खून नहीं। उसके आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा। उसे लग रहा था कि पूरी धरती गोल गोल धूम रही है। किसी प्रकार से वह अपने को सँभाला। उसे बड़ा दुख महसूस हो रहा था। अब उसे आगे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। वह पुराण के साथ थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा, फिर बोला कि लॉकडाउन के दौरान मैंने तुम्हारे फोन को कई बार मिलाने की कोशिश की, लेकिन कभी फोन स्विच ऑफ था तो कभी घंटी बज करके रह जाती थी। कोई जवाब नहीं मिलता था। पुराण ने बताया कि पापा की बीमारी कारण सब लोग उसी में व्यस्त थे। इस कारण कोई किसी का फोन नहीं ले पा रहा था।

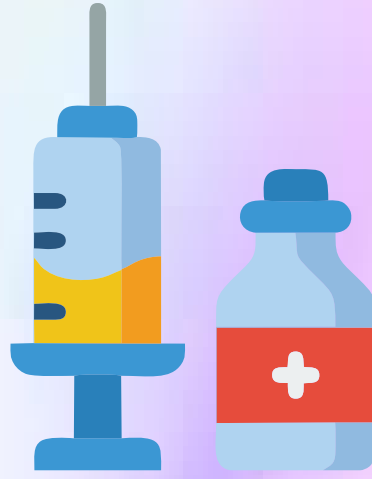
इसी बीच उनके क्लास टीचर आ गए और वह कक्षा के सभी बच्चों को एक जगह बैठा कर के कुछ जरूरी बातें बताई और यह भी बताया कि विद्यालय के एक शिक्षक एवं एक अन्य कर्मचारी की कोविड बीमारी से मृत्यु हो जाने के कारण से आज किसी प्रकार की कोई कक्षा नहीं होगी। यह समाचार वेद और उनके साथियों के लिए एक दूसरा वज्रपात के समान रहा। कक्षा में शिक्षक की आत्मा की शांति के लिए सभी छात्र दो मिनट का मौन रखें फिर शिक्षक द्वारा छात्रों को उनके घर वापस जाने के लिए कहा गया।



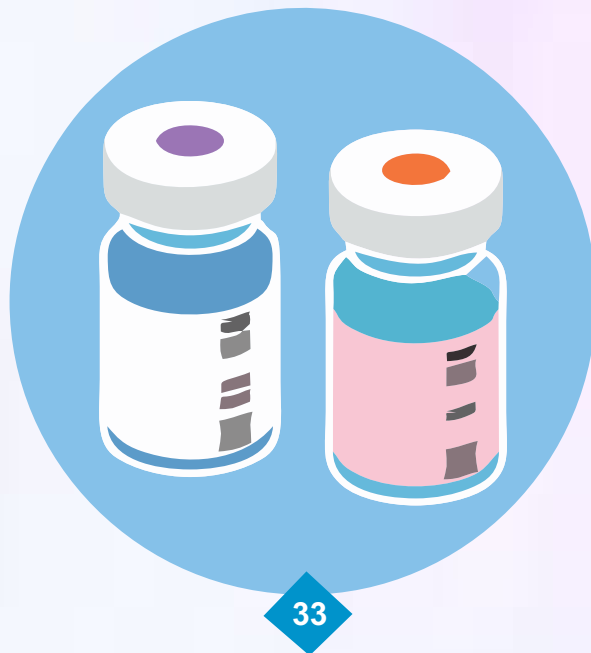


विद्यालय में वेद और पुराण थोड़ी देर के लिए एक दूसरे के साथ रहे। थोड़ी मोड़ी पढ़ाई की बातें की और फिर पुराण अपने घर चला गया। थोड़ी देर में वेद भी उदास मन से घर वापस चल दिया। विद्यालय में कोरोना के कारण से अलग-अलग कक्षाओं के बच्चों को अलग-अलग दिन बुलाया जा रहा था। इसलिए विद्यालय में काफी कम बच्चे दिखाई दे रहे थे। आज वेद को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह कोविड बीमारी की भयावहता को पहली बार इतने करीब से महसूस कर रहा था। वह अब किसी तरह से जल्दी से जल्दी घर पहुँच जाना चाहता था।

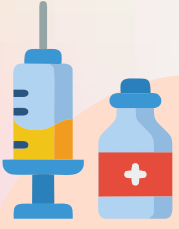




# टीके का असर



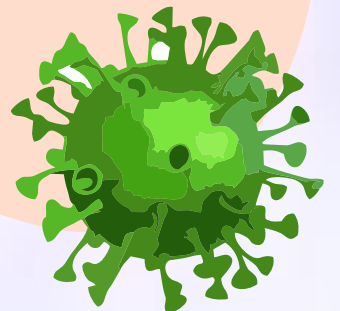


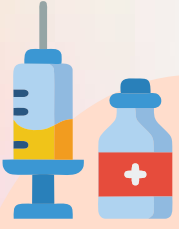


खाना खाने के बाद मुझे हल्की सी नींद महसूस हुई। एक झपकी सी आ गई। तभी किसी के आने की आहट महसूस हुई। आंख खुली तो देखा कि सामने मुकुट लगाए अजीब ढंग का व्यक्ति खड़ा हुआ है। मुझे देख कर वह हल्के से कुटिल मुस्कान मुस्कुराया। उसे देखकर थोड़ा डर सा लगा। फिर मुझे लगा कि मैंने इसे पहले भी कहीं देखा है। यह बात मैं सोच रहा था कि वह बोला - 'आप सही सोच रहे हैं। हम पहले भी मिले हुए हैं। आजकल हमें बहुत लंबी यात्रा करनी पड़ रही है। किंतु सफलता नहीं मिल पा रहे हैं। मैं काफी थक गया हूँ। यद्यपि मैंने यह प्रयास किया कि मुझे जो भी रास्ता मिले, मैं उससे होकर चला जाऊं, किंतु अब हर जगह मेरे रास्ते में अवरोध डाल करके जबरदस्त ढंग से रोकने का प्रयास किया जा रहा है। वह बोलता जा रहा था। उसने आगे कहा- 'कई देशों के बीच हवाई जहाज यात्रा को रोक दिया गया है। मैंने जब देखा कि कुछ देशों में तो मेरे रास्ते को रोकने के लिए सभी प्रकार के उपाय कर दिए गए हैं'। इसलिए फिर मैंने भी अपने रूप में बदलाव किए। मैंने उत्सुकता बस पूछा- 'तो तुम वही हो जो पिछली बार पूरे भारत में भ्रमण किए थे'। वह बोला - 'हाँ! हाँ! मैं वही हूँ। किंतु इस बार मैंने अपने आकार में थोड़ा सा बदलाव किया है'।

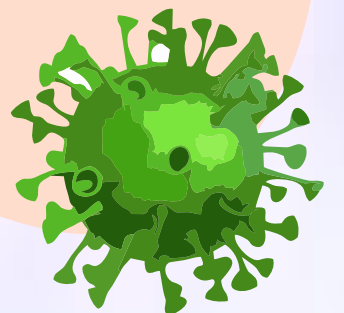
फिर मैंने पूछा- 'तुम्हें कब और कौन रोक रहा है' ? वह बोला- वही लोग जो मुँह पर अब हमेशा मास्क लगाये हुए हैं और अपने पास सैनिटाइजर रखे हैं, लोगों के बीच में लंबी दूरी। इस कारण से मुझे एक व्यक्ति से दूसरे तक पहुँचने में दिक्कत हो रही है। तब मैंने कहा कि लेकिन अब तो हमारे यहाँ पूरे देश में टीका भी लगाया जा रहा है और तुम्हें रोकने के लिए लोग और भी कई उपाय कर रहे हैं।

यह बात सुनते ही वह वह बहुत ही जोर जोर से चिल्लाने लगा और घबड़ा करके इधर उधर भागने लगा। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि वह इतना क्यों परेशान हो रहा है। उसकी चिल्लाहट की आवाज जोर जोर से मेरे कानों में जा रही थी। थोड़ी ही देर में जमीन पर गिरा और निर्जीव हो गया। तभी मेरी आँख खुल गयी। अच्छा तो यह मैंने स्वप्न देखा था। मैं स्वप्न को ले करके सोचने लगा कि आखिर टीके की बात पर कोरोना





वायरस स्वप्न में भी इतना भयभीत दिखा। फिर मुझे ख्याल आया कि कोविड टीका की उपयोगिता पर टीवी पर जो कार्यक्रम देखा था, वही इस बार स्वप्न में भी बहुत ही विचित्र रूप में दिखायी दिया। किन्तु कोविड बचाव के लिए टीका एक बहुत ही कारगर उपाय है, इसके प्रति मैं आश्वस्त हो गया।





# कोविड प्रोजेक्ट

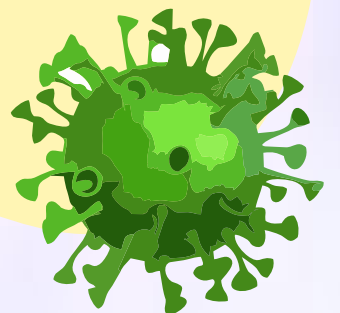




कोविड के कारण पूरे शहर, कस्बे आदि सभी जगहों पर लॉकडाउन लगा दिया गया था। यह लॉकडाउन काफी दिनों तक जारी रहा। इस दौरान सभी स्कूल, कॉलेज भी बंद रहे। आशीष का विधालय भी बंद था। जब लॉकडाउन हटने की घोषणा हुई तो फिर अन्य जगहों की तरह विधालय भी धीरे-धीरे खुलने लगे। पहले दिन जब आशीष अपने विधालय गया तो वह अपने सभी मित्रों से मिल करके एक दूसरे का हाल चाल लिया। इसके बाद जब कक्षा आरम्भ हुई, तो फिर उनके शिक्षकों ने सभी छात्रों से उनका हाल चाल पूछा। फिर उन्हें कोविड बीमारी से सावधान रहने के लिए विभिन्न प्रकार की जानकारी दे करके जागरूक किया। वे सभी छात्रों से उनकी समस्याएं भी पूछी और उचित सलाह भी दिये।

शिक्षकों ने सभी छात्रों को कोविड बीमारी पर एक प्रोजेक्ट बनाने का कार्य दिया। शिक्षकों ने छात्रों को यह भी निर्देश दिया कि यह प्रोजेक्ट छोटा होना चाहिए, किन्तु उसमें कोविड से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण बातें आ जानी चाहिए। उन्होंने बताया कि जिनका प्रोजेक्ट अच्छा होगा, उसे विधालय की तरफ से पुरस्कृत किया जाएगा और फिर उसे और आगे बढ़ा कर दिखाया जाएगा। आशीष जब घर आया तो सबसे पहले उसे यह कार्य बहुत ही आसान लगा। फिर उसे ध्यान आया कि उसके अन्य सभी साथी भी इसकी तैयारी कर रहे होंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि वह बहुत ही सावधानी और अच्छी तैयारी के साथ इस प्रोजेक्ट को करे, जिससे कि उसका प्रोजेक्ट सबसे अच्छा रहे।

अब आशीष अपने प्रोजेक्ट के लिए तैयारी करना शुरू कर दिया। इसके लिए कोविड से सम्बन्धित जानकारियों का अध्ययन किया। इसलिए उसने कोविड से सम्बन्धित उन्ही पुस्तक एवं शोध पत्रिकाओं को लिया जो कि विश्वसनीय थे। इसके बाद भी वह पूर्व में बने कई प्रोजेक्ट भी देखें। कोविड के बारे में सही जानकारी पाने के लिए उसने आयुष मंत्रालय और वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन की वेबसाइट का अध्ययन करके उससे जानकारी प्राप्त किया। इससे उन्हे पता चल गया कि उसके बारे में क्या-क्या बातें लोगों को बताई गई है। अब उसकी समझ में आ गया कि प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए कुछ

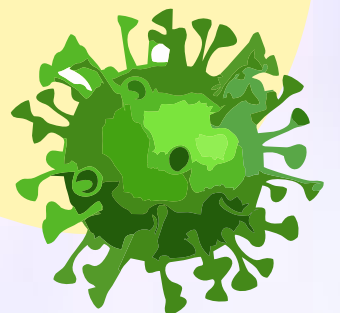




सूचनाएं तो अवश्य देनी है। इसमें कोविड बीमारी के कारण उससे बचाव और खानपान में अपनाई जाने वाली सावधानी जैसे बातें होती हैं। इसी के साथ कोविड बीमारी से स्वस्थ होकर के घर आए व्यक्तियों को आगे किस प्रकार की सावधानी बरतनी है, उसके बारे में भी जानकारी दी जानी चाहिए और इसमें यह भी बताया जाना चाहिए कि कोविड का टीका लगाने के क्या-क्या फायदे हैं और टीका लगाने के लिए क्या प्रक्रिया अपनाई जाती है और इसमें क्या सावधानी अपनानी है।

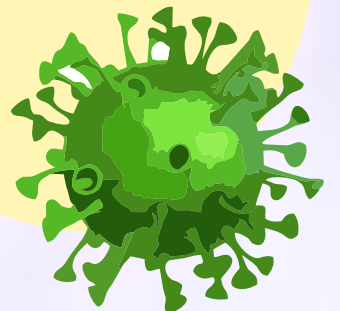
इस प्रकार आशीष ने अपने प्रोजेक्ट के मुख्य शीर्षक तैयार किया कि कोविड किसे कहते हैं, और यह क्यों होता है, इसके होने के कारणों और इससे बचाव में क्या किया जाना चाहिए तथा खानपान में क्या सावधानियां अपनानी चाहिए और इसका इलाज कैसे किया जाता है। कोविड टीका कैसे लगाया जाता है। आशीष ने अपने प्रोजेक्ट के लिए ढेर सारी सूचना सामग्री जब एकत्र कर लिया, तो फिर इसके बारे में लिखना आरंभ किया। प्रोजेक्ट लिखने के दौरान वह काफी लंबा हो गया तो उसमें बहुत सी बातों को छोटा किया और जो मुख्य बातें थी, इसे ही देता था। कहीं पर बॉक्स भी लगा करके उसे प्रस्तुत किया था। उसने इसमें जगह जगह उपशीर्षक भी दिया।

फिर आशीष ने कोविड प्रोजेक्ट की एक बहुत ही अच्छी डिजाइन तैयार किया। वहीं पर, तैयार किये गये कोविड प्रोजेक्ट के बैकग्राउंड को दूसरे रंग में भी दिया। उसने फोटो भी पर्याप्त संख्या में अपने प्रोजेक्ट के लिए इकट्ठा किया था। प्रोजेक्ट में जहाँ जैसी आवश्यकता होती, वहाँ पर अपनी लिखी हुई सामग्री के साथ वैसा फोटो भी लगा दिया था। फिर उसे ख्याल आया कि प्रोजेक्ट इस ढंग से दिया जाना चाहिए, जिससे कि इसे ऑडियो वीडियो कार्यक्रम के रूप में तैयार किया जा सके और वेब माध्यम पर अच्छी प्रकार से लोग देख सुन सके। इसके लिए तो उसकी भाषा को बहुत ही सरल और सुगम रूप में बनाये जाने की आवश्यकता हुई। इसे ध्यान में रख करके उसने वैसा ही उसे रूप दिया।



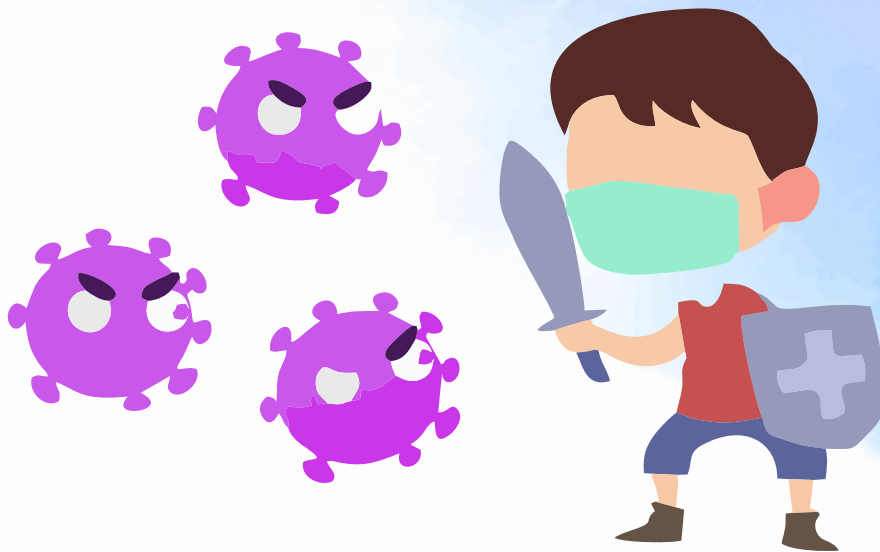


अब जिस दिन प्रोजेक्ट जमा करने की तिथि थी, उस दिन आशीष साथियों के साथ विद्यालय जाकर अपना प्रोजेक्ट जमा कर दिया। वह अपने प्रोजेक्ट के लिए काफी मेहनत किया था और उसे विश्वास था कि उसका प्रोजेक्ट अवश्य चयन कियया जाएगा। निर्धारित तिथि को जब प्रोजेक्ट पुरस्कार की घोषणा हुई, तो पता चला कि आशीष के प्रोजेक्ट को पहला स्थान प्राप्त हुआ है। आशीष ने कोविड बीमारी के बारे में सबसे सुन्दर तरीके से सूचना प्रस्तुत किया था। आशीष का प्रोजेक्ट इतने अच्छे ढंग से तैयार किया गया था कि सरकार ने इसे अपनी सूचना सामग्री की पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया। यह इसके लिए बहुत ही गौरव की बात थी। इसके बाद एक कार्यक्रम का आयोजन करके आशीष को सम्मानित किया गया। उसे अपनी मेहनत का पूरा फल प्राप्त हुआ।





# भग्गु के ज्ञान की परीक्षा



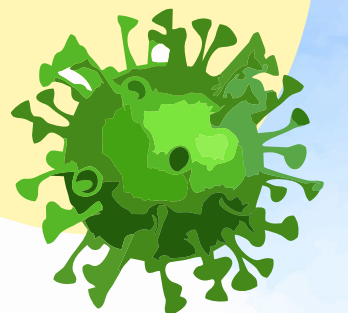
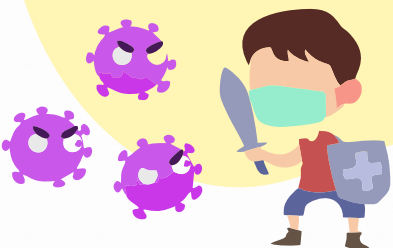


कोविड की बीमारी के बारे में काफी चर्चा होने के कारण से भग्गु को भी इसके इलाज के उन तरीकों के बारे में काफी जानकारी मिल गई, जिसे कि घरेलू दवा के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। एक दिन वह इसी तरह से बैठ कर लोगों को बताने लगे कि कोरोना बीमारी से बचने के लिए उन्हे कई तरह की जानकारी मिल गई। रघु ने पूछा अगर आपको सारी जानकारी मिल गई तो जरा हमें भी बताएं। इस पर भग्गु बोले- 'आप तो खूब सारी बातों के जानकार हैं, फिर आपको हम क्या बतायें'। यह सुनकर रघु बोले कि ठीक है कि वह तो जानकार हैं। लेकिन आप की जानकारी कितनी है, इसे भी हम जानना चाहेंगे, जिससे कि अगर कहीं कोई कमी है तो उसको बता सके।

तब भग्गु थोड़ा संकोच करते हुए कहा- 'अच्छा, अब आप सवाल पूछिये जिससे कि उसका उत्तर बताये।' इस पर रघु ने भग्गु से पूछा कि काढ़े के बारे में जरा जानकारी दीजिए। उसे कैसे बनाते हैं और काढ़े का उपयोग क्या है? इस पर भग्गु बोले कि काढ़े को सही ढंग से पीने से कोविड से संबंधित समस्या कम होती है। यह गले में खराश, खांसी, सीने में जकड़न और बुखार के लिए बहुत फायदेमंद है। फिर वह बोले कि इसको जहाँ तक बनाने की बात है तो अगर एक आदमी के लिए काढ़ा बनाना है, तो एक कप पानी में तुलसी के आठ दस पत्ती एक लौंग, एक काली मिर्च और एक टुकड़ा दालचीनी और मुलेठी, हल्दी, अजवाइन आदि मिला करके उसे पाँच मिनट तक उबाल लेते हैं और फिर उसके बाद उसे छान करके पी लेते हैं। यह सुन करके रघु बोले - 'वाह भग्गु ! तुम्हे तो काढ़े के बारे में अच्छी जानकारी है। भग्गु ने कहा कि आप हमेशा हमें बेवकूफ समझते रहे, लेकिन ऐसी बात नहीं है।'

तब रघु ने कहा कि ऐसी बात तो वह ऐसा कभी कहा नहीं। फिर थोड़ा सोचकर रघु ने फिर पूछा कि अच्छा आप यह बताओ कि विटामिन सी किससे मिलता है और उसका उपयोग क्या है ?

इस पर रघु थोड़ी देर सोचते रह गये। फिर मानों उन्हे एकाएक कुछ याद आ गया।

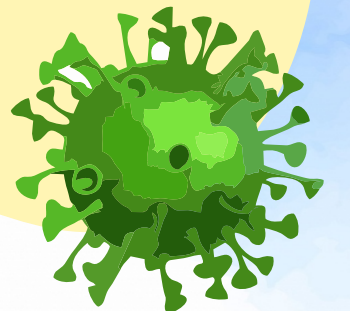
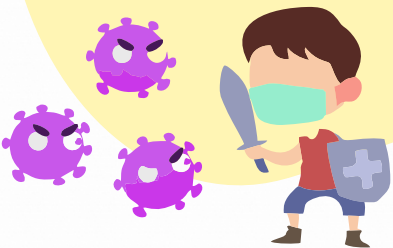






और वह जोर से बोले कि विटामिन सी खट्टे फलों में मिलता है जिसमें संतरा, नींबू, आँवला शामिल हैं। इसके अलावा यह पपीता, अमरुद, पालक, आम और स्ट्रॉबेरी में भी मिलता है और इसका सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि इससे व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है और सांस के संक्रमण को दूर करने में भी यह बहुत बड़ी भूमिका निभाती है और व्यक्ति के शरीर में ऊर्जा बनी रहती है। विटामिन सी के बारे में भग्गु द्वारा इस तरह से बिल्कुल सही जवाब देने पर रघु को बहुत ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने सोचा कि चलो एक और प्रश्न पूछ कर जरा देखते हैं कि क्या वास्तव में भग्गु विटामिन के बारे में भी जानकारी है। उन्होंने कहा, 'अच्छा यह बताओ कि विटामिन डी का क्या उपयोग है और कहाँ मिलता है' ? भग्गु ने थोड़ा सा दिमाग पर जोर दिया, उसके बाद बोलना शुरू किया। विटामिन डी सूर्य की किरणों में मिलता है। इसके अलावा यह दूध, दही, अंडा, ब्रोकली, बादाम, मशरूम, में भी मिलता है।

अब भग्गु में काफी आत्मविश्वास उत्पन्न हो गया। वह रघु से बोले कि और कोई सवाल? भग्गु विभिन्न सवालों का जिस तरीके से तुरंत जवाब दिया, उससे रघु को यह मानना पड़ा कि भग्गु ने कोरोना काल में काफी जानकारी हासिल कर ली है। रघु अब समझ गये कि कोरोना के समय में भग्गु रेडियो, टीवी और अन्य माध्यमों पर इसके बचाव और खान पान के बारे में लगातार बतायी जा रही बातों को बहुत ही ध्यान से सुनते रहे हैं और यही कारण है कि वह इससे सम्बन्धित सभी बातों का जवाब दे रहे हैं। उन्हें यह बात समझ में आ गयी कि भग्गु कोरोना बीमारी से बचने के लिए सभी तरीके का प्रयास कर रहे हैं और इस प्रयास के क्रम में ही उन्होंने जानकारी हासिल करके उसका कोविड से बचाव के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने भग्गु की काफी प्रशंसा की। भग्गु फूले न समाये जा रहे थे।





# टीका पंजीकरण का फर्जी सन्देश



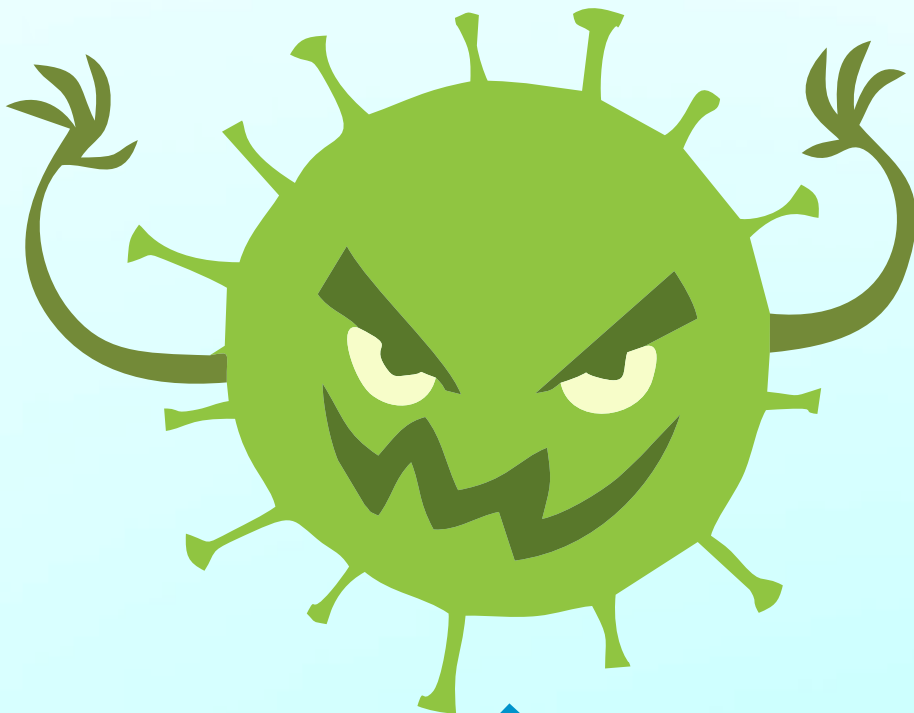


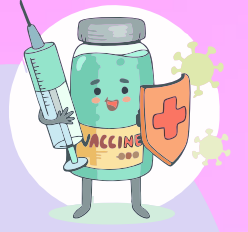
भग्गु अपने घर पर आराम कर रहे थे। उसी समय पर मोबाइल की घंटी बजने लगी। मोबाइल का नंबर अनजान था। पहले तो वह उठाना नहीं चाह रहे थे। किंतु बाद में ख्याल आया कि कोविड के इस दौर में कहीं बहुत ही जरूरी काम से कोई दोस्त फोन न कर रहा हो। यह सोचते हुए उन्होंने फोन को उठा दिया और जैसे हैलो शब्द बोला, दूसरी तरफ से बहुत ही मीठी आवाज में एक लड़की बोली - 'नमस्कार! क्या आप भग्गु बोल रहे हैं' ? भग्गु बोले - 'अरे, आपने भग्गु को फोन मिलाया है, तो भग्गु ही न बोलेंगे'। इस पर लड़की ने उनको धन्यवाद कहा और फिर बोली- 'क्या आप कोविड का टीका लगवा चुके हैं' ? इस पर भग्गु ने कहा कि अरे अभी तो वे पंजीकरण भी नहीं कराये हैं। यह सुन उस फोन करने वाली लड़की ने कहा कि - 'भग्गु जी! कोविड का टीका लगाने के लिए आपके व्हाट्सएप पर मैसेज दे दिया गया है। आप इसे खोल करके देख लीजिएगा और इस पर पंजीकरण करा करके कोविड टीका अवश्य लगवा लीजियेगा'। यह सुन कर भग्गु ने कहा कि ठीक है और यह कहते हुए उन्होंने फोन को काट दिया। थोड़ी देर बाद भग्गु अपने मोबाइल पर व्हाट्सएप मैसेज देखा। भग्गु ने जब उसे खोला तो टीके का पंजीकरण के लिए एक ऐप का लिंक दिया गया था और पंजीकरण कराने के लिए इस ऐप को डाउनलोड करना था। अभी भग्गु उसे डाउनलोड करना चाह रहे थे, तभी उन्हें ख्याल आया कि कोविड टीका पंजीकरण के लिए तो आरोग्य सेतु ऐप और कोविवैक्स पोर्टल दिया गया है। उसके लिए तीसरा ऐप कहाँ से आ गया है। उन्होंने इसके बारे में रघु से फोन करके और जानकारी एकत्र करना आरम्भ किया। तब उन्हें पता चला कि यह एक तरह का गलत लिंक दिया गया है। इस पर और भी फर्जी सन्देश भी दिये जा रहे हैं। खुद सरकार भी इससे लोगों को बचने के लिए कह रही है। तब उनकी समझ आ गया कि इस प्रकार के सन्देश लोगों को धोखा देने के लिए आ रहे हैं और इसके प्रति सावधान रहने की जरूरत है। उन्होंने उस सन्देश को मिटा दिया। और अपने अन्य साथियों को भी इसके बारे में जानकारी दी। इस तरह वह एक धोखा खाने से बच गये।





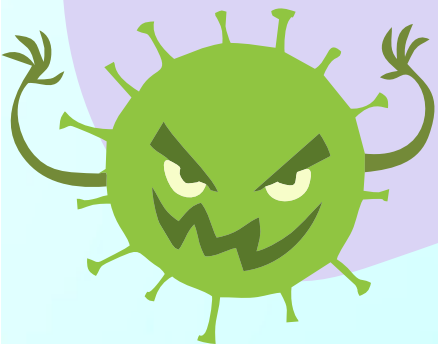
# कोविड से सबक

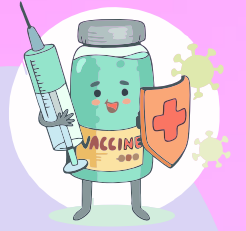




श्याम बिहारी कोविड के दूसरी लहर की चपेट में आ गए और इसके इलाज के लिए उन्हें अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। वहाँ पर वह लगभग एक माह रहे। इस दौरान वे विभिन्न प्रकार की विकट परिस्थितियों से गुजरे। अस्पताल का वातावरण बहुत खराब तो नहीं था, किंतु बहुत अच्छा भी नहीं था। श्यामबिहारी अस्पताल में रहते हुए काफी दिन हो गये थे। अस्पताल में रहते हुए वह किसी से मिल भी नहीं सकते थे। चारों तरफ का पूरा माहौल काफी भारी भरकम बना हुआ था। हर तरफ मरीजों की कराह ही गूँजती थी। उनके अगल बगल में ही कोविड के कई मरीज पड़े थे। उसमें से कुछ की हालत तो काफी खराब थी। अभी पिछले हफ्ते में एक मरीज की मौत हो गई थी। इसे देख कर तो वह काफी डर गए थे। तब से वह काफी तनाव में भी रहते थे। वह सोचते थे कि उनकी तबीयत कहीं और खराब न हो जाए। अब वह लगातार भगवान से प्रार्थना करते थे और प्रण करते थे कि एक बार यदि वह स्वस्थ हो गये तो फिर सभी प्रकार के स्वास्थ्य नियमों का अवश्य पालन करेंगे। इस बात का वह बार-बार संकल्प भी लेते थे। अस्पताल में जब भी डॉक्टर या नर्स भर्ती मरीजों को कोई बात बताते तो उसे बहुत ही ध्यान से सुनते थे। उन्हें इस बात की जानकारी दी जाती थी कि स्वस्थ रहने के लिए क्या क्या कार्य करना चाहिए। श्याम बिहारी सोचते वह जब घर जायेंगे तो इन सबका बहुत ही अच्छी प्रकार से पालन करेंगे।

श्यामबिहारी की तबियत खराब होने के पीछे वह स्वयं जिम्मेदार रहे थे। पिछले दिनों वह विभाग के काम से काफी यात्रा की थी। कई जगहों से धूम करके जब श्यामबिहारी घर आये तो उनकी तबियत खराब हो गयी। पहले खाँसी आयी और फिर बुखार भी हो गया। जब कोविड का टेस्ट हुआ तो फिर श्यामबिहारी की कोविड जाँच रिपोर्ट पॉजिटिव आयी। हाँलांकि उन्हें बुखार कई दिनों से आ रहा था और वह इसे सामान्य बुखार समझ करके दो दिन ऐसे ही गवाँ दिए। किंतु जाँच की रिपोर्ट जब आयी तो पता चला कि उन्हें

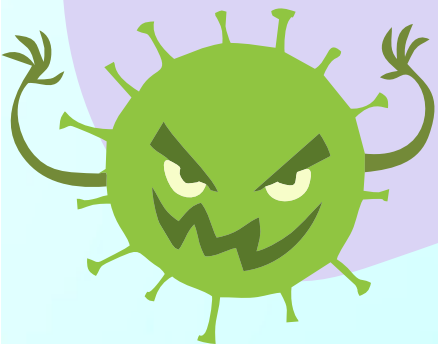


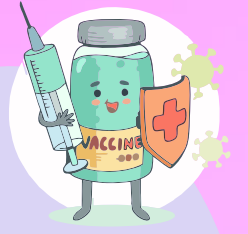


कोविड हो गया है। बाद में उनकी हालत भी काफी खराब होने लगी। उनके शरीर का ऑक्सीजन लेवल घटने लगा। उन्हें सांस लेने में समस्या होने लगी और ऐसा लग रहा था कि प्राण अब निकले कि तब निकले। यह गनीमत रही कि उन्हें समय से अस्पताल में भर्ती हो जाने का अवसर मिल गया, अन्यथा इस समय अस्पताल में बेड को ले करके ही काफी मारामारी चल रही थी। उनके पड़ोस के जिस सज्जन को पिछले दिनों कोरोना बीमारी हुई थी, उन्हें अस्पताल में बेड नहीं उपलब्ध हो पाया और सही प्रकार से इलाज न हो पाने से ही उनकी हालत काफी खराब हो गई थी। इस मामले में श्यामबिहारी सौभाग्यशाली रहे कि उन्हें बेड उपलब्ध हो गया और समय से इलाज शुरू हो गया था।

अस्पताल में बिस्तर पर पड़े पड़े श्याम बिहारी पिछले दिनों की बातें याद आ रही थी। कोविड बचाव के लिए पहले जितनी बातें बताई गई थी, शुरू में तो बहुत ही ध्यान से पालन करते थे। बाद में वे धीरे-धीरे वे लापरवाही करने लगे। पहले जहाँ कहीं भी चले जाते, तो उस समय वह मास्क लगाते और सेनीटाइजर रखते थे और लोगों से दूरी बनाकर रहते थे। कहीं किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं थी। किंतु धीरे-धीरे लापरवाही बढ़ने लगी और कार्यालय में अपने सहकर्मियों के साथ किसी भी प्रकार से कोई भी सावधानी नहीं अपनाते थे। आज जब ये सब बातें उन्हें याद आ रही थी तो वे मन ही मन सोचते थे कि काश! एक बार ठीक हो जाते तो फिर वे सभी कार्य और सावधानी अपनाते जिससे कि न केवल वे बल्कि अपने परिवार के अन्य सभी सदस्यों के भी स्वास्थ्य को अच्छा करने के लिए कार्य करते।

खैर श्याम बिहारी को इलाज से अब फायदा होने लगा। अस्पताल में भर्ती हुए काफी दिन व्यतीत हो चुके थे। धीरे धीरे श्याम बिहारी स्वस्थ महसूस करने लगे थे और सब कुछ ठीक होने लगा। उन्हें सांस लेने में जो पहले समस्या आ रही थी, वह बिल्कुल भी नहीं थी। खांसी, बुखार तो कई दिनों पहले ही दूर हो गया था। अब उन्हें उम्मीद हो गयी कि



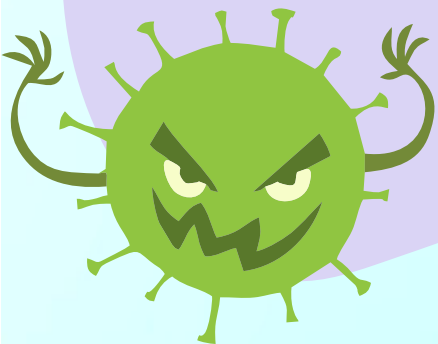


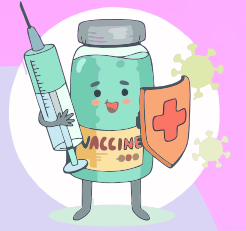
अस्पताल से शीघ्र ही छुट्टी मिल जाएगी। आखिरकार वह समय भी आ गया। श्याम बिहारी की सभी मेडिकल रिपोर्ट में सब कुछ सही पाया गया और उन्हें अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया।

घर आने के बाद श्यामबिहारी ने डॉक्टर के सुझाए गए बातों के अनुसार एहतियात बरतना आरंभ किया। किंतु उनके मन में लगातार यह बात भी रहती थी कि जैसे ही वह पूर्ण स्वस्थ हो जाएंगे तो फिर अच्छे स्वास्थ्य बनाए रखने के सब कुछ अन्य कार्य करेंगे। इसी बीच श्यामबिहारी ने घर पर कई गमले मंगा कर उसमें तुलसी, गिलोय एवं अन्य प्रकार के औषधीय गुण वाले पौधों को लगाया।

धीरे धीरे उन्होंने काफी संख्या में इस प्रकार के आयुर्वेदिक पौधों को मंगा करके ढेर सारे गमलों में लगा दिया। सवेरे वे अब तुलसी की पत्तियों को चबाते या काढ़ा बनाकर पीते। वह दूध की चाय पीना तो बिल्कुल छोड़ दिये। उन्होंने घर के सभी सदस्यों के लिए भी यही बात लागू किया। अब वह समय से खाना खाते थे। पहले उनकी पत्नी बार बार समय से खाना खाने के लिए कहती, किन्तु वह इस पर कोई ध्यान नहीं देते थे और आखिर में जब खाना खाते थे तो उसे भी जल्दी जल्दी इस तरह से खाते थे, मानो उन्हें किसी भी तरीके से निपटाना है। किंतु अब उन्होंने यह सब आदत बदल दी। अब वह देर रात तक जागने के बजाय जल्दी सो जाते।

इसी प्रकार वे सुबह जल्दी से उठ भी जाते। सवेरे उठने के बाद भी आधे घंटे टहलने अवश्य जाते थे। पहले थोड़ी देर योगासन और व्यायाम भी करते थे। इससे उनका बेडौल शरीर सुडौल रूप में बदल गया। उनका मोटापा काफी कम हो गया। स्वयं श्यामलाल को काफी अच्छा लगने लगा। उनकी स्थिति काफी सुधर गई थी।

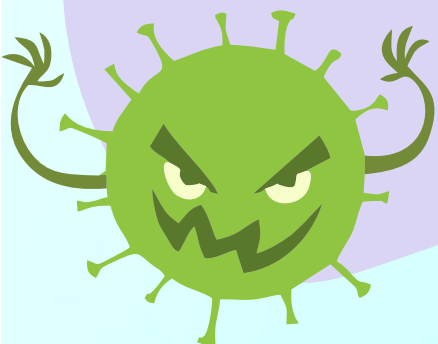




इसी के साथ उन्होंने योग एवं व्यायाम का अध्ययन किया, जिससे कि उन्हें ज्ञात हुआ कि इस उम्र में वे कौन सा व्यायाम और कौन सा योग कर सकते हैं। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि सर्दी के मौसम में मांस पेशियां शिथिल और सख्त हो जाती हैं। इसके लिए व्यायाम करना आवश्यक है, जिससे कि शरीर में गर्माहट रहे और मांसपेशियां स्वस्थ बनीं रहे। अब वह स्नान से पहले तेल की मालिश करना भी नहीं भूलते थे। पहले स्नान या तो नहीं करते या फिर बहुत ही शीघ्रता से करते थे। अब यह सब मामले में बहुत ही अनुशासित हो गये। श्यामलाल की इस दिनचर्या से उनकी पत्नी और घर के अन्य सदस्यों को भी बहुत ही सहूलियत हो गई।

श्यामलाल के कार्यालय में पहले दिन भर बाजार के चाय और अन्य प्रकार के खानपान का सिलसिला चलता रहता था। किंतु अब घर से बना हुआ खाना ही ले जाते और चाय पीना तो बिल्कुल बंद कर दिया। इससे श्यामलाल को काफी सुविधा भी हो गई। उनकी पेट में गैस बनने की समस्या भी समाप्त हो गई। अपने सभी साथियों को भी इसी दिनचर्या को अपनाने के लिए कहते थे। श्यामलाल भोजन के मामलों में भी काफी सतर्क हो गए। बाजार से वह खूब हरी सब्जी और अन्य प्रकार का ऐसे फल लेते जिसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और सभी प्रकार के विटामिन पाये जाते।

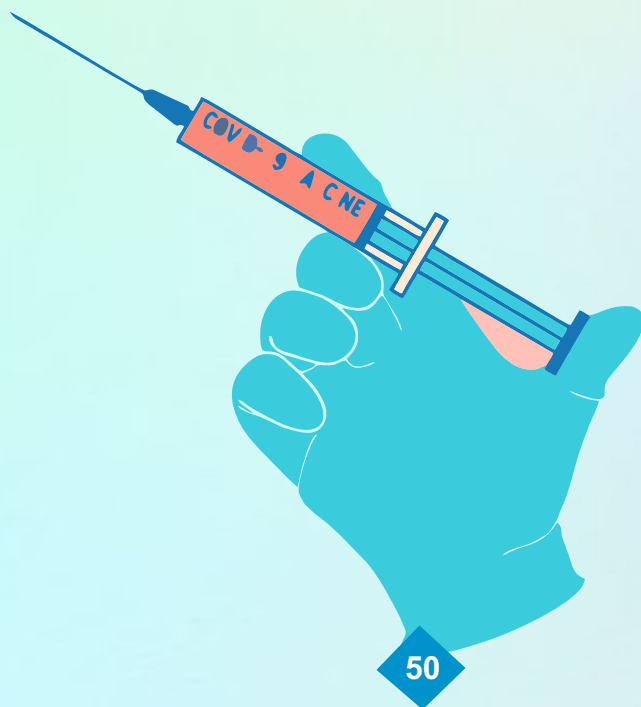
कुल मिला करके अब स्थिति यह रही कि वह एक संतुलित भोजन लेने के लिए हर तरह से प्रयास करते थे। इन सबका परिणाम यह हुआ कि श्यामलाल के व्यक्तित्व में ऐसा बदलाव आया कि उनकी पूरी जिंदगी का तौर तरीका ही बदल गया। उनके परिवार के सभी लोगों को भी काफी लाभ मिला और एक नई राह पर उनकी जिंदगी चलने लगी।







# जांच का भय

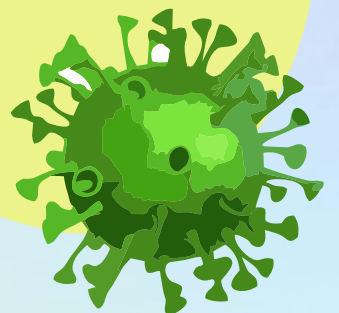




रामपुर गांव के लोगों की कोरोना की जाँच कराने के लिए शहर से स्वास्थ्य टीम अपनी तैयारी जब पूरी कर ली तो निर्धारित दिन और समय पर वह गाँव के लिए जिले के स्वास्थ्य केंद्र से प्रस्थान किया। उस टीम में कुल पाँच सदस्य शामिल थे। गाँव में महिलाओं एवं लड़कियों को ध्यान में रखकर इस जाँच टीम में दो महिला स्वास्थ्यकर्मी भी शामिल किए गए थे, जिससे कि महिलाओं की कोविड बीमारी की जाँच में किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो।

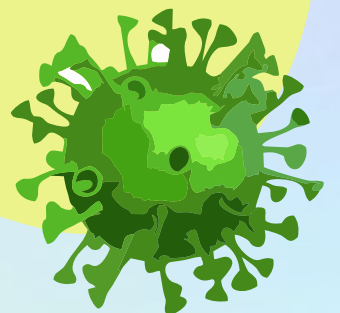
रामपुर गाँव में पिछले चार दिन में ही पाँच लोगों की मौत हो गई थी। मरने वाले सभी लोगों को पहले से कोई बीमारी नहीं थी। सभी लोगों के मामले में बस यही हुआ कि वे पहले थोड़ा सा बीमार हुए और हल्का सा बुखार आया। पहले लोग उसे सामान्य बुखार समझ करके जब तक दो दिन दवा देते कि मरीज की हालत गंभीर हो जाती और फिर जब तक लोग बेहतर इलाज के लिए शहर ले जाने की बात सोचते, तब तक वक्त गुजर जाता और मरीज की मौत हो जाती। इस प्रकार के मरने की घटना के बारे में समाचारपत्रों एवं अन्य जनमाध्यमों में भी काफी प्रमुखता के साथ समाचार दिया गया। इसे देख कर प्रशासन गाँव के सभी लोगों की कोविड जाँच कराने का निर्णय किया। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी ने एक जाँच दल का गठन किया गया जिसे गाँव में जाकर के सभी लोगों की कोविड जाँच करनी थी।

उधर रामपुर गाँव के सभी लोगों को इस बात की जानकारी मिल गई थी कि उनके गाँव में कोविड की जाँच करने के लिए स्वास्थ्य विभाग से एक जाँच दल आ रहा है। यह बात सुनते ही सभी लोग काफी घबड़ा गए, क्योंकि गाँव के लोग यह बात सुन चुके थे कि जाँच कराने से आदमी कमजोर हो जाता है और उसकी ताकत बहुत कम हो जाती है। बस यही बात उन्हें परेशान किए जा रही थी। गाँव के कुछ लोगों ने यह निर्णय लिए थे कि वे जाँच वाले दिन गाँव छोड़ कर के चले जाएंगे। वहीं कुछ लोग गाँव में आने वाली जाँच दल का विरोध करने का निर्णय लिया।





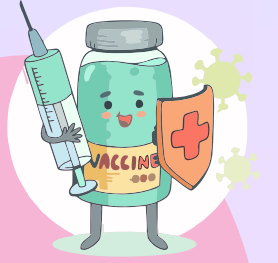
निर्धारित तिथि पर जब जाँच दल गाँव पहुँचा तो आखिर हुआ वही, जिसका डर था। उस दिन कोविड बीमारी की जाँच दल के डर से कुछ लोग तो गाँव ही छोड़कर भाग गए, किंतु कई युवक और प्रौढ़ व्यक्ति गाँव के बाहर खड़े हो गए और जाँच दल को वापस जाने के लिए कहने लगे। गाँव गयी स्वास्थ्य जाँच टीम ने उन्हें समझाने की काफी कोशिश की, किन्तु उन पर कोई असर नहीं हुआ। वे कोई भी बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं थे। जाँच दल ने गाँव के प्रधान से संपर्क करने की कोशिश की, किन्तु उनसे तत्काल संपर्क नहीं हो पाया। इसी बीच दोनों पक्षों में वाद विवाद बढ़ता चला गया। भीड़ भी लगातार बढ़ती गयी। इस दौरान गाँव के कुछ लोग पीछे से ढेला मार दिए और इससे कई लोगों को चोट पहुंची। जाँच दल टीम को इस बात का भय हो गया कि कहीं यह लोग एकदम हिंसा पर उतर न आए। उन्होंने गाँव के लोगों को काफी समझाने का प्रयास किया। किंतु उन पर कोई असर नहीं हुआ। जाँच टीम ने एक बार फिर से गाँव के प्रधान से संपर्क करने की कोशिश की। वह उस समय गाँव से कहीं बाहर गये थे। सम्पर्क होने पर उन्होंने बताया कि वह तुरंत घटनास्थल पर पहुँच रहे हैं। थोड़ी ही देर में गाँव के प्रधान घटना स्थल पर पहुँच गये। जब प्रधान वहाँ पहुँचे तो जाँच टीम ने सारी बातें उन्हें बताई। प्रधान ने गाँव वालों को समझाने की कोशिश की, किन्तु उन पर कोई असर नहीं हो रहा था। बाद में गाँव के कुछ लोगों ने शर्त रखी कि यदि प्रधान अपनी और अपने परिवार के लोगों की जाँच कराएंगे, तभी वे भी कोविड की जाँच कराएंगे। प्रधान जी ने यह बात तुरन्त मान ली और उन्होंने न केवल अपनी जाँच कराई, बल्कि अपने परिवार के सभी लोगों की भी जाँच कराई। इस तरह सर्वप्रथम गाँव के प्रधान के जाँच करा लेने के बाद गाँव के अन्य लोगों का भ्रम दूर हुआ उनका जाँच में विश्वास बना और गाँव के सभी लोग ने कोविड जाँच कराने के लिए तैयार हो गये। फिर एक एक करके गाँव के सभी लोगों की कोविड जाँच की गयी। इसमें से कई कोविड जाँच रिपोर्ट पाजिटिव निकली। उन सभी को आवश्यक दवाईयाँ और सलाह भी दिये गये। इस प्रकार गाँव के प्रधान की समझदारी से एक समस्या का सही समाधान हो गया।





# ग्राम प्रधान की दूरदर्शिता





श्यामलाल अपने गाँव रामपुर के प्रधान थे। वे अपने गाँव के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते थे। उनके गाँव को आदर्श गांव का पुरस्कार भी मिल चुका था। स्वयं श्यामलाल को भी एक अच्छे ग्राम प्रधान के रूप में कार्य करने के लिए कई जगह से विभिन्न प्रकार के पुरस्कार दिए जा चुके थे। इधर कोविड के संक्रमण के कारण सब जगहों पर अतिसावधानी अपनायी जा रही थी। श्याम लाल भी इस बात के लिए सतत् प्रयास कर रहे थे कि उनके गाँव के लोग कारोना वायरस संक्रमित न हो। इसके लिए वे सभी को सतत् जागरूक करते रहते थे। वे उन्हें सावधान करते थे कि कोई लापरवाही न करे जिससे कि कराना को लोगों के बीच फैलने का अवसर मिले।

उधर पास के कस्बे में कोविड बीमारी के प्रसार हो जाने के कारण श्यामलाल को अपने गाँव में भी उसके पहुँच जाने की आशंका होने लगी। उन्हें इस बात का भय था कि गाँव के लोग अपनी खरीदारी के लिए उस कस्बे में जाते रहते हैं, तो कहीं वे कोरोना बीमारी की चपेट में न आ जाए। कोरोना बीमारी से बचने के लिए जिन बातों को एहतियात में अपनाया जाता था उसे तो श्यामलाल ने अपने गाँव में बहुत ही अच्छी तरीके से बता दिया था और लोगों को यह भी चेतावनी दे दी थी कि जो भी घर से बाहर निकलने पर मास्क नहीं लगाएगा और अपने पास सैनिटाइजर की एक छोटी सी शीशी नहीं रखेगा, वह उसकी सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं देते हैं। इसी के साथ ही वह अपने गाँव के लोगों को बिना किसी आवश्यक कार्य के घर के बाहर न जाने और लोगों से दूरी बना करके ही बातचीत करने का भी सलाह दिया था। किन्तु इन सब सावधानी की बातों को बताने के बावजूद कुछ लोग लापरवाही बरतते थे। आज भी लोग बिना वजह आसपास के कस्बों में चले गए थे। इसी बीच श्यामलाल को यह ज्ञात हुआ कि गाँव के कुछ युवक जो कि मुंबई रोजगार के लिए गए थे, वे वापस आ रहे हैं। श्यामलाल ने तय किया कि इन सभी लोगों को ग्राम पंचायत के भवन में चौदह दिन





के लिए कोरेन्टाइन कर दिया जाना जरूरी है, नहीं तो समस्या हो सकती है। श्यामलाल ने पंचायत भवन में इन युवकों को रुकने की सभी आवश्यक व्यवस्था कर दी। जब युवक गाँव पहुंचे तो उन्हें पंचायत भवन में ठहरा दिया गया। सभी युवकों के लिए उचित ढंग से खानपान की व्यवस्था कर दी गई।

इसी बीच श्यामलाल को पता चला कि गाँव के एक युवक को हल्का बुखार हो गया है। पहले इसे सामान्य बुखार समझकर दवा दी गई। किंतु बुखार के खत्म न होने पर प्रधान ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर से संपर्क किया और उनसे यह भी निवेदन किया कि गाँव में आकर कोविड के बारे में आवश्यक जानकारियां उपलब्ध करा दें।

इसी बीच बाहर से आए एक युवक को भी खाँसी आने लगी। कोविड बीमारी की आशंकावश उसका तुरन्त जाँच कराया गया। किन्तु उसकी कोविड जाँच रिपोर्ट निगेटिव रही।

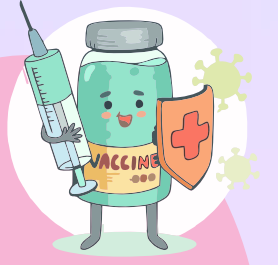
निर्धारित दिन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर गाँव में आये। वह काफी अनुभवी डॉक्टर थे। उन्होंने गाँव आकर सबसे पहले ग्राम प्रधान से बात चीत की और फिर कोरोना के बारे में जानकारी देने के लिए गांव के लोगों को बुलाकर उन्हें दूर-दूर बैठाया गया। सभी लोगों को कोविड गाइडलाइन का पालन कराते हुए सही ढंग से बैठ जाने के बाद डॉक्टर ने उन्हें कोरोना वायरस के बारे में बहुत ही जरूरी बातें बताने लगे। इसे सब लोग ध्यान देकर सुनने लगे। ग्रामीणों को बताया गया कि कोविड बीमारी बहुत ही तेजी से फैल रही है और जो लोग बचने के लिए उचित उपाय नहीं कर रहे हैं वे तो इसकी चपेट में आ रहे हैं। इसलिए सभी लोग मास्क लगाए तथा सैनिटाइजर और साबुन का उपयोग करें और लोगों से दूरी बना करके रहे। फिर डाक्टर जी ने यह भी बताया कि सब लोग किसी तरह का तनाव और घबराहट न





पालें और न ही वे परेशान हो। डॉक्टर की बातें सभी लोग बड़े ध्यान से सुन रहे थे। तभी गांव के ही एक बुजुर्ग व्यक्ति रामप्रसाद ने प्रश्न किया कि यदि किसी को आशंका हो कि उसे कोरोना हुआ है तब क्या करना चाहिए। डाक्टर ने उन्हें समझाया कि कई बार लोग जाने अनजाने कहीं गए रहते हैं तो उन्हें कोरोना न होने पर भी मन में भय छा जाता है। तब उसके और परिवार के लिए लाभदायक यही है कि वह कुछ दिन के लिए वे घर में ही अलग होकर के रहे। उन्होंने कहा कि इसे होम आइसोलेशन कहते हैं। तभी आइसोलेशन शब्द सुनकर के सभी लोग आश्चर्य में पड़ गए और एक दूसरे का मुँह देखने लगे। यह देख कर के गाँव के प्रधान जी समझ गए कि यह लोग आइसोलेशन शब्द को ले करके परेशान हैं। उन्होंने डॉक्टर से यह पद को और स्पष्ट करने के लिए निवेदन किया कहा। तब डॉक्टर ने बताया कि जब किसी को कोरोना बीमारी की बहुत ही मामूली लक्षण होता है या कोरोना होने की आशंका होती है तो वह अपने घर में ही चौदह दिन सबसे अलग रहता है जिससे कि यदि उसे सच में कोरोना हुआ है, तो किसी अन्य व्यक्ति को भी घर में कोरोना न हो जाए। यह सुनकर के राम प्रसाद बोले यह तो होना ही चाहिए। फिर डॉक्टर ने बताया कि इसके बारे में स्वास्थ्य मंत्रालय ने कुछ गाइडलाइन भी बनायी है जिसका आशय यही है कि कुछ बातों को इस दौरान ध्यान देना चाहिए। इस पर सब लोग डॉक्टर की ओर देखने लगे कि किन बातों को ध्यान में रखना है। डॉक्टर जी ने आगे बताया कि इसका आशय यही है कि व्यक्ति को अन्य लोगों के संपर्क में नहीं आना चाहिए और मरीज के पास जाते समय मास्क लगाना चाहिए तथा मरीज को खुद मास्क लगाए रहना चाहिए। वह व्यक्ति जो आइसोलेशन में रहा है, उसे भी अपना अलग सामान उपयोग करना चाहिए। वह अपने खाने के बर्तन से लेकर के तौलिया आदि अलग रखें तो इससे किसी और को कोरोना होने की आशंका नहीं होती है। तभी सामने बैठे एक सज्जन को जोरदार ढंग से खांसी आई और उनके समीप के अगल-बगल बैठे लोग उठ करके इधर उधर भागने लगे। दूर बैठे अन्य लोग भी सतर्क हो गए। सभी लोग उनकी तरफ



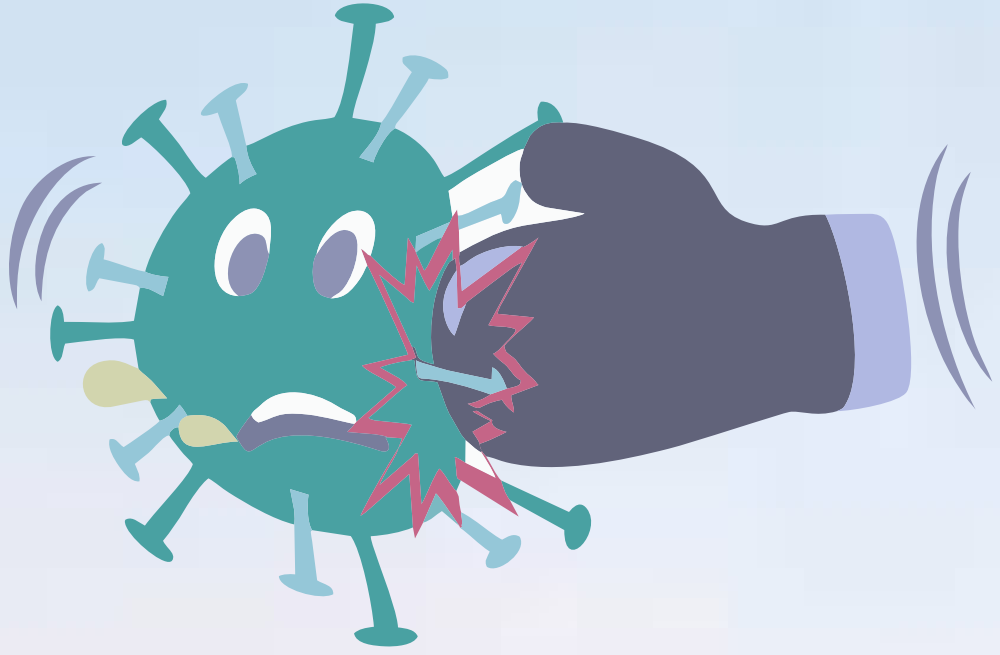


इस तरह से देख रहे थे जैसे कि बैठक में कोई अजीब जीव आ गया है और लगा कि यह बैठक खत्म हो जाएगी। डाक्टर ने लोगों को समझाया कि यह बहुत ही स्वाभाविक खॉसी थी। लेकिन खॉसते और छींकते समय एहतियात के तौर पर नाक, मुँह पर रुमाल हाथ लगा लेना चाहिए।

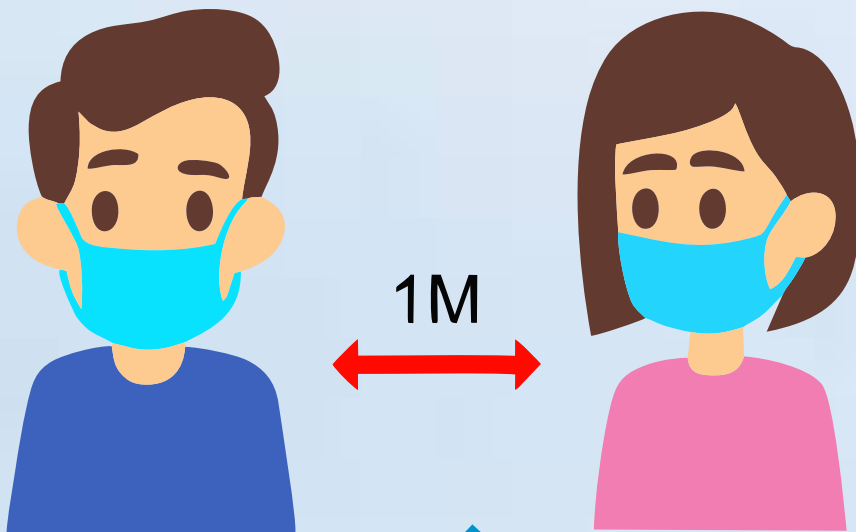
फिर डॉक्टरजी ने कहा कि यहाँ पर सभी लोग मास्क लगा कर आये हैं। डरने की कोई बात नहीं है। तभी गाँव के रामजीवन खड़े हो बोले- 'डॉक्टर साहब! कोरोना का कम लक्ष्मण का क्या मतलब होता है'। यह सुनकर डॉक्टर ने उन्हें समझाया कि कम लक्षण होने का आशय यही है कि व्यक्ति में प्रमाणिक ठोस कोविड लक्षण नहीं है यानि कोरोना रोग के संदर्भ में खाँसी, बुखार, दर्द आदि तमाम जो लक्षण बताए गए हैं, उनमें से कोई भी लक्षण नहीं है। तभी रामलाल बोले कि जब व्यक्ति में कोरोना बीमारी का कोई लक्षण ही नहीं है, तो फिर घर में अलग-थलग रहने की आवश्यकता क्या है। तब डॉक्टर ने उन्हें समझाया कि लक्षण न होने का आशय यही है कि व्यक्ति में प्रमाणिक लक्ष्मण नहीं है। अर्थात् कोरोना के संदर्भ में खाँसी, बुखार, दर्द, तमाम जो लक्षण बताए गये हैं, उनमें से कोई भी लक्षण व्यक्ति नहीं है। इसी के साथ उन्होंने बताया कि जिस व्यक्ति को कोरोना का संक्रमण हो जाता है तो कई बार उसमें लक्षण उभरने में कई दिन लग जाते हैं। इसलिए आशंका होने पर भी व्यक्ति से दूरी बनाए रखना चाहिए और वह घर में अलग रहना चाहिए। इस तरह बैठक काफी देर तक चलती रही। इस बैठक में बहुत से लोगों ने अपनी आशंकाएँ दूर की। डाक्टरजी ने बहुत ही धैर्य के साथ सबका जवाब दिया। आखिर में जब सब लोगों की सभी प्रकार की आशंकाएँ दूर हो गयी तो फिर डॉक्टर जी ने सबको साफ सफाई बनाये रखने और सही ढंग से खान पान करने के बारे में भी कुछ बातें बतायीं। अब देर रात्रि हो जाने के कारण फिर बैठक समाप्त कर दी गयी। किन्तु इस बैठक से सभी को काफी लाभ हुआ और वे कोविड बीमारी के बारे में काफी बातें जान समझ गये थे। आखिर में गाँव के प्रधान जी ने अपनी और गाँव की तरफ से डॉक्टर को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

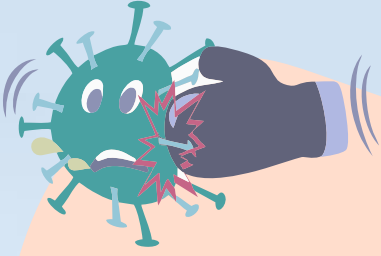






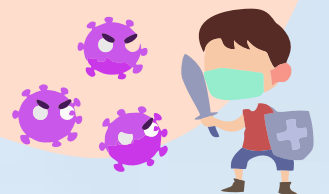
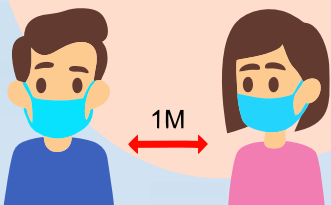
# सामाजिक दायित्व का निर्वाह

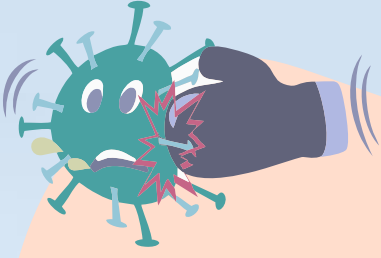




कोविड बीमारी का शहर में का तेजी से प्रसार हो रहा था। कई घरों में यह बीमारी फैल चुकी थी। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ था। समाचारपत्रों में रोज लोगों के संक्रमित होकर बीमार होने और कुछ लोगों के मरने की खबरें निकलने लगी। इससे लोगों में काफी भय व्याप्त हो गया था। इसी बीच संजय के पिता भी संक्रमित हो गए। उन्हें पहले हल्की-फुल्की खांसी आ रही थी। दूसरे दिन फिर बुखार भी आ गया। पहले घर के लोग समझे कि यह सामान्य बुखार, खांसी है। अतः दो दिन बुखार की दवा दे दी गई। दवा खाने से थोड़ी देर के लिए बुखार उतर जाता। किंतु थोड़े ही देर बाद बुखार फिर हो जाता। संजय का एक दोस्त रवि डाक्टर था। संजय ने सोचा कि उसी से बात करते हैं। वह रवि को फोन मिला करके सारी बातें बताई। रवि ने उसे सावधान करते हुए सलाह दिया कि वह अपने पिता की सबसे पहले कोरोना की जांच करा लें। फिर उसमें कुछ ऐसी दवा भी बताई जो कि कोरोना के संभावित मरीजों को दी जाती है। इसलिए रवि ने उन दवाओं को फिलहाल अभी से खिलाना आरम्भ कर दिया और उन्हें वह घर पर सबसे अलग एक कमरे में कर दिया। संजय ने रवि को यह भी सलाह दिया कि कि घर के सभी लोगों को मास्क लगाना चाहिए और हाथ धोते रहना चाहिए। उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को अन्य व्यक्ति द्वारा उपयोग में लाए जाने के लिए मना कर दिया।

संजय ने मेडिकल टीम को भी बुला लिया। यह टीम घर आकर के उसके पिता का कोविड जांच का सैंपल लिया और फिर टीम ने जानकारी दी कि रिपोर्ट एक दिन बाद आएगी। संजय ने यह तय किया कि जब जांच दल घर आ ही गया है तो बेहतर यही होगा कि घर के सभी लोगों की जांच हो जाए। इस प्रकार घर के सभी लोगों की जांच करायी गयी। इसी बीच देर रात संजय के पिता की तबीयत फिर खराब होने लगी। उन्हें खांसी तो थी, किंतु अब सांस लेने में भी समस्या होने लगी। जब यह बात उसने अपने दोस्त रवि को बताई तो अब उसकी आशंका विश्वास में बदल गया कि उन्हें कोविड हुआ है। उसने संजय को अपने पिता को ऑक्सीजन लेवल मापने के लिए कहा। जब संजय ने उसे माप कर देखा तो उसका मान कम था। यह बात रवि को बतायी। उसके दोस्त ने आक्सीजन बढ़ाने के लिए कुछ तरीके बताए। इसी के साथ साथ

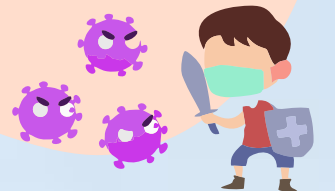
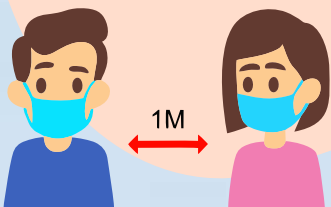


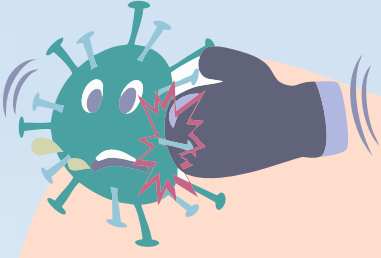


उसने यह भी सलाह दिया कि किसी भी समय उसके पिता को ऑक्सीजन की आवश्यकता पड़ सकती है। अतः एक आक्सीजन सिलेंडर ले लेनी चाहिए।

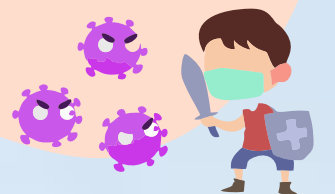
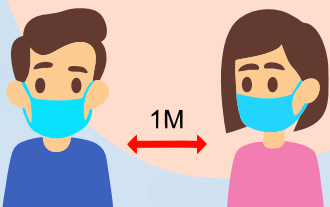
इसी बीच कोविड जाँच की रिपोर्ट भी आ गई, जिससे ज्ञात हुआ कि उसके पिता को कोविड हो गया है। गनीमत यह रहा कि घर के अन्य सभी सदस्यों का कोविड रिपोर्ट निगेटिव रहा। यह काफी राहत की बात थी। किंतु संजय के लिए इस समय विकट समस्या एक सिलेंडर की व्यवस्था करने की थी। उसने सिलेंडर के लिए एजेंसी को फोन मिलाया तो ज्ञात हुआ कि गोदाम में सिलेंडर नहीं है। संजय ने कई और जगहों पर फोन मिलाया तो सभी जगहों से नकारात्मक उत्तर मिला। उसे घबराहट होने लगी। उसने अपने दोस्तों से बात की तो पता चला कि इस समय पूरे शहर में आक्सीजन की किल्लत के कारण लोगों ने आक्सीजन सिलेंडर जमा कर ली है और ऑक्सीजन को ब्लैकमेल भी कर रहे हैं और ऊँचे ऊँचे दामों पर उसे बेच रहे हैं। पहले रवि ने सोचा कि क्यों न आक्सीजन अधिक दाम पर ले लिया जाये। आखिर पिता के जान जीवन का मामला है। किंतु उसे यह एक गलत कार्य लगा। उसने सिलेंडर के दाम का जब पता लगाया तो ज्ञात हुआ फिर वह अपने वास्तविक दाम से कई गुना अधिक कीमत पर बेचा जा रहा है।

संजय ने यह महसूस किया कि यह लोगों की मजबूरी का फायदा उठाया जा रहा है। अतः उसने निर्णय लिया कि वह इसके खिलाफ आवाज उठाएगा। उसने सिलेंडर ब्लैकमेल करने वाले से संपर्क करके अपने लिए सिलेंडर की मांग की। जब उसने उसका दाम पूछा तो फिर उसने उसका काफी अधिक दाम बताया। तब उसने सारी बातें रिकॉर्ड कर लिया, जिससे कि उसके पास जमाखोरों द्वारा किए जाने वाले गलत कार्य का पुख्ता प्रमाण रहे। इसके बाद उसने पूरे बातचीत को सोशल मीडिया पर डाल दिया और उसकी शिकायत पुलिस के अधिकारियों से की। उसने स्थानीय पुलिस को कॉल करने की कोशिश की, किन्तु वे ध्यान नहीं दे रहे थे। तब संजय ने ऊपर के पुलिस अधिकारी को बता दिया और यह सारा मामला सोशल मीडिया पर वायरल होने लगा।





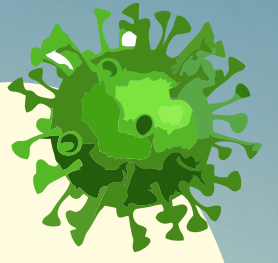
उसने पूरे मामले को लेकर जोरदार अभियान चलाया। आखिर में इस कार्य में लगे बहुत लोगों की गिरफ्तारी हुई और जो लोग बहुत परेशान थे, उन सभी लोगों को बहुत आसानी से आक्सीजन सिलेंडर मिलने लगे और सब लोग संजय के इस काम की तारीफ करने लगे। संजय को इस बात का संतोष हो रहा था उसने समाज की एक ऐसी बुराई को दूर किया जो लोगों की जान की कीमत खेला जा रहा था।





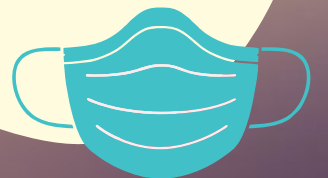
# कोविड में आलस

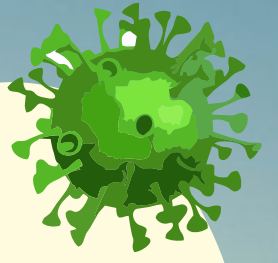




छोटेलाल जब घर से निकले तो मास्क से लगाना भूल गए। घर से काफी दूर जब आ गए तो अपने चारों तरफ लोगों को मास्क लगाए देखा, तब उन्हें ख्याल आया कि वह तो मास्क लगाना भूल गए हैं। घर से काफी दूर निकल आने के कारण अब वापस जाने में उन्हें काफी उलझन हो रही थी। सामने थोड़ी ही दूर पर स्थित बाजार से कुछ सामान खरीदना था। सोचे कि कौन अब घर वापस जाकर मास्क लगाएगा। फिर उन्होंने सोचा कि यह देखें कि कहीं वह पहले से ही मास्क तो नहीं लगाए हैं, क्योंकि अक्सर मास्क लगाकर उसे ऊपर या नीचे कर देते थे। एक बार अपने गले में चारों तरफ हाथ फेरा तो पता चला कि वास्तव में वह मास्क नहीं लगाए हैं और फिर उन्हें बड़ी निराशा हुई। तभी उन्हें एक और आशा की किरण दिखायी दी कि कहीं मास्क को वह अपने पॉकेट में तो नहीं रख लिया है। साइकिल रोक करके उन्होंने अपने शर्ट, पेन्ट के सभी पाकेट को टटोला। फिर पीछे वाले पाकेट को भी देखा। उन्हें फिर बहुत ही निराशा हाथ लगी। मास्क कहीं नहीं था। वह वास्तव में घर में खूँटी पर टाँग दिए थे। अब वह कोरोना को ही काफी भला बुरा कहने लगे।

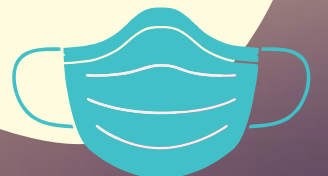
उनको इस तरह से बोलते देख चारों तरफ लोगों को आश्चर्य होने लगा। सब लोग उनकी तरफ देखने लगे। तब उन्हें ख्याल आया कि यह तो उस सार्वजनिक स्थल पर खड़े होकर बोल रहे हैं। फिर वह शांत हो गीत गुनगनाने लगे, जिससे कि लोगों को यह लगे कि वह कोई गाना गा रहे थे। छोटेलाल यह जानते थे कि बाजार से पहले चौराहे पर पुलिस खड़ी होगी और वह लोगों को मास्क के लिए जरूर टोक रही होगी। पूर्व में वह कई बार तो कुछ लोगों को दौड़ा करके पिटाई भी की है। इसलिए यह सोचे कि क्यों न रास्ता बदल कर के चला जाए। किन्तु अब तो रास्ता बदल कर के जाने का मतलब है कि बाजार की पूरी दूरी तीन गुनी अधिक हो जायेगी। इससे तो अच्छा है कि घर जाकर के मास्क पहन करके ही चले आते। अब वह कुछ और उपाय सोचने लगा। पास में गमछा भी नहीं था। उन्हे यह भी पता था कि जुर्माने के बराबर उनके पास पैसा





भी नहीं है।

तभी छोटेलाल को लगा ख्याल आया कि क्यों न रुमाल को मुँह पर बांध लें। आखिर नाक और मुँह को ढक करके ही तो रखना है। वह तुरंत पाकेट से रुमाल निकाले। कई दिनों से साफ न करने कारण वह काफी गंदी हो गई थी और उससे बदबू भी आ रही थी। किन्तु सामने आये संकट से बचने के लिए इससे समझौता करना पड़ा। जैसे ही उन्होंने रुमाल को नाक पर रखा, तुरंत उसके बदबू के कारण अंदर पूरा शरीर सिहर गया। फिर भी किसी तरीके से उन्होंने रुमाल को नाक और मुँह पर बांध लिया। अब उनके अंदर काफी आत्मविश्वास आ गया और वह साइकिल पर बहुत ही निश्चिंत होकर उसे जोर जोर से चलाने लगे और एक गाना भी गाने लगे। अभी चौराहा आने वाला ही था कि मुँह पर बँधी रुमाल की गठ्ठी खुल गई थी, क्योंकि वह बहुत ही छोटी थी। वह हवा में विपरीत दिशा में होते हुए काफी दूर चली गई और उधर छोटेलाल साइकिल से चौराहे के लगभग करीब पहुँच गए। घबड़ाहट में साइकिल को लेकर तेजी से दूसरी तरफ भागने की कोशिश की, किन्तु उनके सामने एक गड्ढा था और वह साइकिल सहित गड्ढे में गिर पड़े। कुछ देर तक तो कुछ भी समझ में नहीं आया। जब होश आया तो अपने को लोगों से घिरा पाये। चारों तरफ लोग उन्हें घेरकर खड़े थे और कह रहे थे, इतनी चौड़ी सड़क के होते हुए गड्ढे में गिरे हुए हो। वह किसी को कुछ भी नहीं बता सके। उन्हें बस मास्क लगाना हमेशा के लिए याद हो गया हो गया।





# आइसोलेशन का दर्द







रामबली इस समय अपने घर आइसोलेशन में रह रहे हैं। पिछले दिनों वे बाजार चले गए थे और बाजार से आने के बाद उन्हें खांसी आ गई थी। खांसी आने के कारण ही घर वालों ने उन्हें कोविड की आशंकावश आइसोलेशन में रख दिया। रामबली को भी महसूस हुआ कि यदि कहीं उन्हें कोविड हो गया है तो अच्छा हो कि कुछ दिन के लिए आइसोलेशन में रहे, नहीं तो उनके साथ साथ घर में सबको यह हो जाएगा। अब तब से वह एक कमरे में रह रहे हैं। उनके आइसोलेशन में जाने के कारण अब पूरे घर में हल्ला गुल्ला काफी बढ़ गया है। वह हर काम के लिए घर वालों पर निर्भर हो गये हैं और किसी भी चीज की जरूरत पड़ती है तो उसे चिल्लाना पड़ता, क्योंकि उनका कमरा बिल्कुल अलग थलग है। सभी लोग उनसे दूर ही रहते हैं और कोई भी उनके पास आता है तो पूरा मास्क आँख तक चढ़ाये रहता है। इस दौरान यदि वह मास्क नहीं लगाए रहते हैं, तो उन्हें तुरन्त कहा जाता है कि मास्क लगा लें, नहीं तो आप के पास नहीं आएंगे। फिर थक हार कर वह मास्क लगाते हैं। आखिर मास्क लगाना भी आवश्यक है। अब न तो कोई भी व्यक्ति उनके पास में बैठता है, और न ही कोई बात करता है। आरम्भ में तो पूरा घर उन्हें ऐसे देखता था, मानों वह कोई विचित्र जंतु बन गए हैं। वे अगर वह किसी से बात करने के लिए थोड़ा सा उसके करीब जाने की कोशिश करते, तो वह उनसे ऐसे छिपता, मानों घर में कोई शेर घुस आया है। अगर वह कमरे से बाहर बिना मास्क के तनिक भी झांकने की कोशिश करते, तो बच्चे, पत्नी सभी मास्क लगाने के लिए चिल्लाने लगते। बेचारे उस मनहूस घड़ी को याद करते, जिसमें कि वह अपने मित्र श्यामलाल के साथ बाजार चले गए थे और फिर उनको बुखार आ गया और फिर जाँच में पता चला है कि श्यामलाल को कोविड हो गया है। श्यामलाल ने खुद यह बात अपने दोस्त रामबली को बताई और फिर रामबली ने यह बात अपने घर वालों को बता दिए। घर वालों ने तुरंत उन्हें उसी समय आइसोलेशन में कर दिया। आज आइसोलेशन का चौथा दिन है। अभी दस दिन इसी तरह से बिताना है। यह सोच कर के परेशान हुए जा रहे हैं। हर दिन भारी हो रहा है। इस समय रामबली जिसे भी देखते तो वह तुरंत मास्क चढ़ा कर उन्हें दूर-दूर से घूरने लगता है।





बेचारे जब कभी उनको सामान्य रूप में खाँसने की इच्छा होती, तो भी वह मुँह पर रुमाल रख कर रोक लेते। सोचते कि जब खाँस देने से इतना हड़कंप मचा हुआ है, तो इसे रोक देना ही बेहतर है। अब उन्होंने तय कर लिया कि आइसोलेशन समाप्त होते ही कोविड का टीका लगवाएंगे।

घर के सब लोग जब अखबार पढ़ लेते, तब उसे रामबली को दिया जाता है। एक दिन अखबार में कोविड में कार्य और सावधानी की जानकारी दी गई थी। जिसे पढ़ करके रामबली को कई बातें ज्ञात हुई। अब वह स्वयं काफी सतर्क हो गए। अब अगले दिन से सुबह योग और हल्के व्यायाम करते एवं भजन सुनते और स्वयं भी गाते। घर वालों को अब वही हर तरह से सावधान रहने का निर्देश भी देते जिससे कि रामबली की पत्नी को सुखद आश्चर्य हुआ। अब उनको भी सुविधा भी हो गई। रामबली पूरा दिन अच्छी पुस्तकों को पढ़ने में व्यतीत करते। तभी उनके दिमाग में एक विचार आया कि क्यों न अपने मित्रों से बातचीत किया जाए। अब वह उन सभी मित्रों को फोन मिला करके बात चीत करते, जिनसे बातचीत किये एक अरसा गुजर गये थे। इस प्रकार से धीरे धीरे तेरह दिन व्यतीत हो गए। चौदहवाँ दिन खत्म होते ही घर के सभी सदस्यों ने उनका जोरदार स्वागत कर एक साथ खुशी मनाएं। अब सब लोग उनके पास आ करके उनके धैर्य पूर्वक चौदह दिन व्यतीत करने के कार्य पर खुशी व्यक्त कर उन्हें बधाई दे रहे थे।





# रामलाल की दिनचर्या





रामलाल आजकल रोज बहुत सवेरे ही जग जाते हैं। वह पास वाले उद्यान में जाकर टहलते हैं तो बीच-बीच में हल्का-फुल्का व्यायाम भी करते हैं। कई बार चलते-चलते थोड़ी देर कुछ दूर तक तेजी से चलते हैं फिर कभी कभी थोड़ी दूर दौड़ भी लगाते हैं। चलते हुए जब घर से दूर पार्क पहुँचते हैं तो फिर प्रकृति के सुंदर वातावरण में काफी देर तक बैठकर लंबी लंबी सांसे लेते हैं। वहाँ पर फूलों की सुगंध से पूरा शरीर खिल जाता है। वहाँ जब सूरज निकलता हुआ दिखायी देता है, तब कहीं वह वापस आते हैं।

रामलाल की इस दिनचर्या को देखकर सबको बहुत सुखद आश्चर्य होता है। जो व्यक्ति सुबह धूप निकलने के बाद भी घंटे देर तक सोता रहे, रात में उसके सोने का कोई समय ही न हो, हमेशा जो व्यक्ति कार्य के हड़बड़ी में हो, किसी से बातचीत करने और मिलने की भी कोई फुर्सत न हो, वह अब इस प्रकार से अपने संपूर्ण दिनचर्या में परिवर्तन ला दिया है, वह सबके लिए आश्चर्य का विषय तो है ही। अब सब लोग रामलाल की काफी तारीफ करने से नहीं चुकते थे। रामलाल के घर वालों को भी अब काफी सहूलियत हो गई। उनके खाने, नहाने आदि का समय नियमित हो जाने से घर के बच्चे भी अनुशासन में रहने लगे। उनको रामलाल से प्रेरणा भी मिलने लगी।

रामलाल अभी हाल में ही कोविड रोग से स्वस्थ होकर अस्पताल से लौटे हैं। अस्पताल में एक, दो, चार दिन नहीं पूरे पैतीस दिन गुजारना पड़ा। अस्पताल के अनुभवों ने उनके जीवन में संपूर्ण बदलाव ला दिया है। अपनी लापरवाही और ऊटपटांग दिनचर्या के कारण ही उनको शरीर में कोविड का संक्रमण हुआ था। इधर तो उनका जीवन काफी अस्त व्यस्त हो भी गया था। इस दौरान कभी भी और किसी भी जगह पर चले जाना उनके लिए बहुत ही सामान्य बात बन गई थी। इसी बीच कोविड से संक्रमित होने से बचने हेतु किए जाने वाले एहतियात के प्रति वह पूरी तरह से लापरवाह हो गए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि वह कोरोना वायरस से पूरी तरह से संक्रमित हो गए। कोरोना के लक्षण मिलने पर पहले तो वह घर पर ही कुछ दिन रहकर इलाज किए।





किंतु जब शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो गई तो वह फिर अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। रामलाल अस्पताल में रहने के दौरान ऑक्सीजन की कमी से जूझते हुए मरीजों को देखकर दहल गए। अस्पताल में धीरे-धीरे कोराना से पीड़ित मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती चली गई। मरीजों की अत्यधिक संख्या होने से अस्पताल की सारी व्यवस्था चरमराने लगी। यह सब देख करके रामलाल को काफी घबड़ाहट होती थी।

अस्पताल में सभी लोग बार-बार आक्सीजन की कमी का ही रोगा रो रहे थे। रोगी के शरीर में ऑक्सीजन की कमी की समस्या चारों तरफ दिख रही थी। रामलाल को आक्सीजन लगा हुआ था। किंतु आक्सीजन समाप्त होने से पहले अगर दूसरा सिलेंडर सुनिश्चित नहीं हो जाता तो बहुत बड़ा संकट खड़ा हो जाएगा। यह सोच सोचकर रामलाल सिहर उठते थे। आज आक्सीजन की जरूरत को बतलाते हुए डॉक्टर बार-बार कह रहे थे कि शरीर में ऊर्जा का अधिकतम भाग आक्सीजन से ही मिलता है। यदि आक्सीजन नहीं होगा तो फिर शरीर के सभी अंग ठीक से कार्य नहीं कर सकेंगे। यह बात बार-बार बतायी जा रही थी। रामलाल की देखरेख कर रहे उनके बेटे विजय को अस्पताल की तरफ से सूचना दे दी गई थी कि अब सिर्फ कुछ ही घंटे के लिए आक्सीजन बचा है और आज आक्सीजन के लिए उन्हें व्यवस्था करनी होगी। यह सुन करके वह काफी घबड़ा गया क्योंकि इस समय आक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था करना सबके लिए बहुत ही कठिन हो रहा था। उधर रामलाल की हालत ऐसी थी कि वह स्वयं किसी से बात नहीं कर सकते थे।

इस समय पूरे शहर में आक्सीजन के लिए मारा मारी मची हुई थी। लोगों द्वारा सभी संभावित जगहों पर उसे पाने के लिए प्रयास किये जा रहे थे। जैसे जैसे समय बीतता जा रहा था, उसी के साथ रामलाल की घबड़ाहट भी बढ़ती जा रही थी। उनका बेटा विजय तो काफी परेशान हो रहा था। एक जगह पर आक्सीजन मिलने की जानकारी पर वहाँ फोन





मिलाया तो पता चला कि उसकी कीमत चालीस हजार रुपये थी। उसका दिल बैठ गया। इस बीमारी के इलाज में पहले ही इतना पैसा खर्च हो गया था कि अब तो अधिक पैसा भी नहीं बचा था। उधर आक्सीजन एकदम जरूरी था। अब क्या करें ? उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। तभी विजय को अपने एक बहुत ही करीबी दोस्त मयंक की याद आई, जिसकी उसके पिताजी भी कई बार मदद कर चुके थे। विजय ने उसे फोन मिला करके सारी बातें बतायीं। उसने उसे पूरी मदद का आश्वासन देते हुए कहा कि वह परेशान न हो। उसके घर पर एक आक्सीजन का एक सिलेंडर पड़ा हुआ है। उसे वह अपने चाचा के अस्पताल में भर्ती होने पर लाया था, किन्तु इसका उपयोग नहीं किया जा सका। उसने विजय को बताया कि वह उसे ले करके तुरन्त अस्पताल आ रहा है।

उधर अस्पताल के डॉक्टर बार-बार ऑक्सीजन समाप्त होने की चेतावनी देकर सिलेंडर की मांग कर रहे थे। विजय बहुत ही परेशान हो रहा था। वह बार-बार अपने दोस्त को फोन कर रहा था। किंतु वह नहीं उठा रहा था। अब वह आशंकित हो गया कि कहीं उसने झूठ में ही तो नहीं कह दिया था। समय बीतता जा रहा था। अब बीस मिनट का ही समय उसके पास रह गया। आखिर जब दस मिनट का समय रह गया था, तब वह आता हुआ दिखाई दिया। विजय की जान में जान आई। वह आते ही वह सिलेंडर ले करके पिता के वार्ड की तरफ भागा। उसने सुचारु ढंग से उसे लगा दिया राम लाल को आक्सीजन सही ढंग से मिलने लगा। विजय ने आभार व्यक्त करते हुए मयंक को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

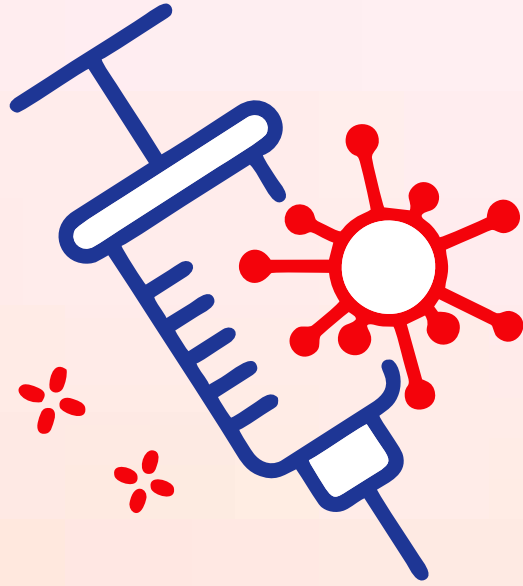
कुछ ही दिनों में रामलाल की तबीयत सुधरने लगी। वह अस्पताल में आक्सीजन के अभाव में मरीजों को तड़पते देखा था। उसी समय से रामलाल ने तय कर लिया था कि शरीर में ऑक्सीजन का स्तर को सही बनाए रखने के लिए वे हर संभव उन तरीकों को अपनाएंगे जिसे कि डॉक्टर बताते हैं। आखिर वह दिन भी आ गया जब रामलाल पूरी तरह से स्वस्थ हो गए।



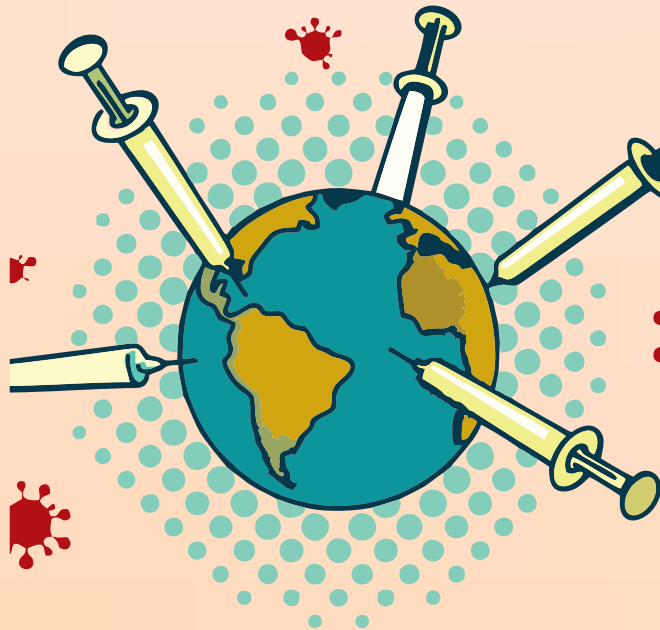


अस्पताल से डिस्चार्ज होने के पहले डॉक्टर ने उन्हें कई बातें बताईं। यह सभी बातें सही स्वास्थ्य बनाये रखने के संबंध में थी। रामलाल इन बातों को पूरी तरह से नोट कर लिए थे। अंत में उन्होंने डॉक्टर से यह भी पूछा कि शरीर में आक्सीजन बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए। इस प्रश्न पर डॉक्टर ने बताया कि उन्हें रोज ताजी हवा में अधिक से अधिक टहलना चाहिए और उचित व्यायाम भी करना चाहिए। इसी के साथ पर्याप्त पानी और संतुलित पौष्टिक भोजन भी लेना चाहिए। संतुलित भोजन करना अति आवश्यक है। डॉक्टर ने रामलाल को सही ढंग से सांस लेने के तरीके को भी बताया। डॉक्टर ने यह भी बताया उन्हें लंबी लंबी सांस लेनी चाहिए और उन्हें नियमित दिनचर्या से रहने के साथ पर्याप्त नींद लेने के लिए भी सलाह दी। सब बातें सुनने के बाद रामलाल ने डॉक्टर को धन्यवाद देते हुए अपने बेटे के साथ घर पहुंचे। घर पहुँचते ही डॉक्टर की बताई गई बातों को पालन करने का संकल्प लिया। तब से वे लगातार उसका पालन कर रहे हैं और उनका स्वास्थ्य लगातार सुधार होता चला गया और घर वाले भी उनको इस रूप में देख करके काफी खुश हुए और उनको अपने काम करने में सहूलियत भी हो गई।

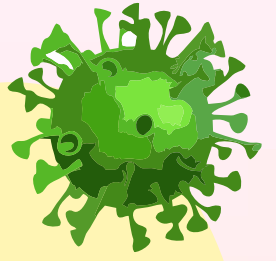
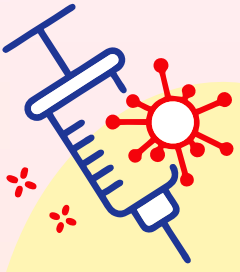




# टीके का भय

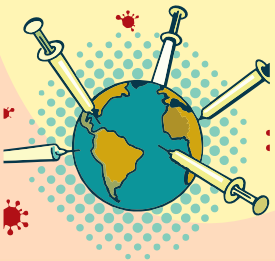


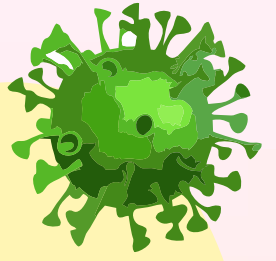




जगन्नाथ ने काफी मशकत के बाद कोविड टीका हेतु अपना पंजीकरण करवाने के लिए तैयार हो गए। उनके बेटे ने कोविन वैक्स और आरोग्य सेतु में से आरोग्य सेतु वेबसाइट का चयन किया। उसे खोल करके उस पर टीका पंजीकरण के लिए मोबाइल नंबर भरना था। उसने जैसे ही मोबाइल नंबर भर कर उस पर क्लिक किया, उसी समय उनके मोबाइल पर ओटीपी आया। इसके बाद ओटीपी नंबर भरते ही कोविड का रजिस्ट्रेशन पेज खुलकर के सामने आ गया। जगन्नाथ भी वहीं पर बैठे हुए थे। इसे देखकर वह बोले कि यह तो बहुत ही आसान पेज है। बेटे ने इस पर उनका पूरा नाम और फोटो, आई कार्ड आदि सूचनाएं डाली। इसके बाद कुछ और प्रक्रियाओं को पूरा करना था। तभी मोबाइल की घंटी बजने लगी। जगन्नाथ ने जल्दी से मोबाइल काट दिया और इस डर से कि कहीं फिर से न फोन आने लगे, उस नम्बर को तुरन्त ब्लॉक कर दिया। बेटे ने फार्म में उम्र और अन्य सूचनाएं तुरंत भरी। उनके घर के सभी सदस्य पहले ही टीका लगवा लिए थे। इसलिए और किसी का नाम नहीं भरना था। इसके बाद जगन्नाथ ने अपने टीका लगवाने का समय और दिन का चयन किया। अब तो फिर टीका केन्द्र पर जा करके टीका ही लगवाना था।

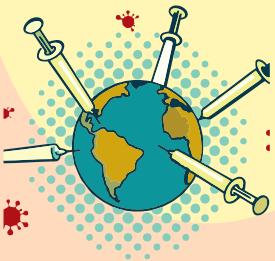
जिस दिन से जगन्नाथ टीके लगवाने के लिए अपना पंजीकरण कराया था, उसी दिन से वह काफी उत्सुक होकर इससे संबंधित सभी प्रकार की सूचनाओं और समाचारों को बहुत ही ध्यान से देखते और सुनते थे। इस दौरान जब भी टीवी पर इससे संबंधित कोई इंटरव्यू होता तो उसे पूरे ध्यान से देखते। इससे उन्हें कई बातों की जानकारी मिलने के साथ-साथ बहुत प्रकार के भ्रम भी दूर होते गए। फिर भी उन्हें टीका को लेकर के तनाव बना रहा। इसलिए अपने दोस्तों से जब भी बात करते तो वह टीका का भी जिक्र करते। यदि उन्हें पता चल जाता है कि फलां व्यक्ति ने भी टीका लगवाया है, तो फिर तुरंत उसे फोन मिला करके उससे इससे संबंधित इतने प्रश्न पूछते कि वह आखिर में परेशान हो यह कहते हुए फोन रख देता कि कुछ जरूरी काम आ गया है।





आखिरकार वह दिन भी आ गया जिस दिन जगन्नाथ को टीका लगवाना था। न जाने क्यों वह देर रात सोने के बावजूद सुबह उनकी नींद जल्दी खुल गई। सवेरे जगन्नाथ नित्य क्रिया करके टीका लगवाने के दिये गये समय से काफी पहले घर से चल पड़े। किन्तु रास्ते में एक जगह पर सड़क जाम होने के कारण वहाँ पर देर तक रुकना पड़ा। जगन्नाथ बार-बार घड़ी को देखते थे। उनके टीका लगवाने का समय करीब आता जा रहा था। सड़क जाम के समाप्त होते ही वह टीका केन्द्र पर बहुत ही तेजी के साथ रवाना हुए। फिर किसी तरह कोविड टीका केन्द्र पर पहुँचे। किन्तु वह लगभग समय पर ही पहुँचे थे।

जगन्नाथ जब टीकाकरण केन्द्र पर पहुँचे तो उन्होंने पाया कि एक व्यक्ति बारी बारी से टीका लगवाने वालों का नाम पुकार रहा था। घबड़ाये जगन्नाथ सबसे पूछ रहे थे कि उनका नाम लिया गया कि नहीं। तब तक उनके नाम की पुकार होने लगी। वह पुकारने वाले काउंटर पर जाकर हाजिर हुए। स्वास्थ्यकर्मी ने उन्हें एक टोकन देते हुए कहा कि जाइए, अंदर भीड़ नहीं है। अंदर जाते ही टीका लगाने वाली नर्स ने बैठने के लिए कहा। उस समय वह काफी तनाव में थे। टीके को ले करके उन्हें बहुत ही घबड़ाहट थी। किन्तु यह तनाव देर तक नहीं रह सका। वहाँ काम कर रही नर्स ने तत्काल ही टीके की सूई लेकर उनके पास आयी और उन्हें बाँह की शर्ट के कपड़े को हटाने के लिए कहा। जगन्नाथ ने जैसे ही बाँह पर से उसे हटा करके सामने किया तभी, नर्स ने उन्हें कोविड टीका लगा दिया। इसके बाद नर्स ने जगन्नाथ को टीके लगाने के बाद सावधानी रखने की कई बातें बतायी और अगली बार टीका लगाने की जानकारी दी। सारा काम एक मिनट से कम समय में निपट गया। उसने फिर उन्हें जाने के लिए कहा। जगन्नाथ सोच रहे थे इसी काम के लिए इतने दिनों से वे कितना परेशान थे। कोविड टीका लगवाना तो बहुत ही आसान काम है। वह व्यर्थ में इतना डरे हुए थे। अब उनका सारा तनाव दूर हो गया था। अब वह घर आ करके दूसरे लोगों को समझा रहे थे कि कोविड टीका से डरने की कोई जरूरत नहीं है। यह बहुत ही आसान है। कोविड टीका लगा करके लोग इस कोविड रोग से बच सकते हैं। घर आकर आज जगन्नाथ काफी शान्ति महसूस कर रहे थे।





# हिमोग्लोबिन की कमी





महेश को पिछले काफी दिनों से कमजोरी, चक्कर आने के साथ-साथ सिर में दर्द भी हो रहा था। अब तो उनके हाथ पैर भी कभी कभी सुन्न हो जाते थे। शरीर का रंग बदलता जा रहा था। वे काफी दिन तक तो अपनी समस्या को टालते रहे। कई लोगों ने कहा कि किसी डॉक्टर को दिखाना जरूरी है। किन्तु पता नहीं किस संकोच में वह डॉक्टर के पास जाने का नाम ही नहीं लेते रहे। एक दिन उनके कान में अजीब अजीब आवाज सुनाई देने लगी। कुछ देर बाद वह बंद हो गई। अब तो महेश काफी घबड़ा गए। उन्हें लगा कि कोई भूत-प्रेत का मामला तो नहीं है।

इसी बीच उनकी भेंट अपने मित्र रामप्रताप से हुई। उन्हें काफी दिनों बाद इस रूप में देख करके रामप्रताप ने महेश को दूर से ही नमस्ते करके पूछा कि -यह क्या हाल बना रखा है? तब महेश ने पूरी बात बताई। सब बात सुनकर रामप्रताप बोले कि जब इतने दिनों से तुम इस तरह से परेशान हो, तो डाक्टर को क्यों नहीं दिखाया? इस पर महेश ने अपने कान में ध्वनि के आने की बात बताई और भूत प्रेत की भी आशंका व्यक्त की। इस पर रामप्रताप ने महेश को जोरदार डॉट लगाई और बोले कि आज के जमाने में विज्ञान कहाँ से कहाँ पहुँच गया और वह इतना अंधविश्वास पाले हुए हैं। वे बोले कि बीमारी शरीर को और खराब कर रहा है और वह अन्धविश्वास के कारण उसका इलाज नहीं करवा रहा है। रामप्रताप ने फिर उन्हें एक डॉक्टर का नाम सुझाया, जहाँ पर कि उनको अपनी समस्याओं को बता करके इलाज कराने की बात कही। उन्होंने कहा कि वह खुद उनके साथ चलेंगे।

दूसरे दिन महेश राम प्रताप को अपने साथ लेकर डॉक्टर के क्लिनिक पर पहुँचे। वहाँ काउंटर पर अपना नाम दर्ज कराकर महेश ने कूपन ले लिया और फिर अपनी बारी का इंतजार करने लगा। जैसे ही महेश का नाम बुलाया गया, रामप्रताप उन्हें लेकर के डॉक्टर के पास पहुँचे। उसने अपनी सारी समस्या डॉक्टर को बतायी। उसकी सब बातें सुन करके डाक्टर बोले कि जो कुछ समस्या





तुम बता रहे हो, वह सारा लक्षण तुम्हारे शरीर में हिमोग्लोबिन की कमी का ही है। किंतु इसकी एक बार फिर जांच करवा ले लेते हैं। इससे इस बात की पुष्टि हो जाएगी। उन्होंने जाँच केंद्र में जाकर जाँच कराने और फिर रिपोर्ट लेकर अगले दिन आने का निर्देश दिया। महेश पैथोलॉजी में जा करके जितने भी प्रकार के जाँच कराने थे, उन सबका जाँच कराने का शुल्क जमा कर दिया और फिर जांच के लिए अपने खून का नमूना भी दे दिया। दूसरे दिन उसकी रिपोर्ट मिलनी थी। अगले दिन वह रिपोर्ट लेकर फिर डॉक्टर के पास गए। रिपोर्ट देखकर डॉक्टर ने कहा कि हमारी आशंका सही निकली। तुम्हारा हीमोग्लोबिन बहुत ही कम हो गया है। एक स्वस्थ आदमी में यह मात्रा सामान्यतौर पर तेरह से लेकर के सत्रह के बीच होता है। किन्तु तुम्हारा हीमोग्लोबिन इस समय साढ़े आठ ही है। यह बहुत ही कम है। फिर उन्होंने महेश के लिए आवश्यक दवाइयां लिखीं। रामप्रताप ने डॉक्टर से हिमोग्लोबिन कम होने का कारण पूछा तो डाक्टर ने बताया कि आयरन की कमी के कारण ही शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा कम हो जाती है और खून के बहने, अधिक काम करने और ठीक से भोजन न करने के कारण भी यह कम हो जाता है।

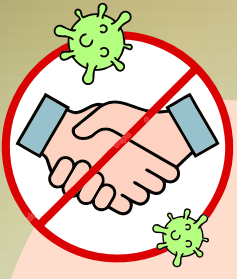
उन्होंने महेश को संतुलित आहार लेने का सलाह दिया। उन्होने बताया कि इस समय उसे वे फल अवश्य लेने चाहिए, जिससे कि हिमोग्लोबिन की कमी पूरा किया जा सके। फिर उन्होंने आयरन के लिए चुकन्दर, अनार के साथ पालक चौलाई और सरसों के साग खाने की भी सलाह दी। अब महेश इन सब बातों का बहुत ही नियम के साथ पालन आरम्भ किया और कुछ ही दिनों में उनकी तबियत सुधरने लगी। इससे उसे दवा द्वारा किये जाने वाले इलाज में विश्वास भी हो गया।





# कार्यालय यात्रा की रिपोर्ट





**रघु** - भग्गु भैया ! कल्हिया सुबहियां कहाँ चल गयल रहला ?

**भग्गु** - कल्हिया हम तनी एक जाँच रिपोर्ट लेवे खातिर चल गईल रहनी।

**रघु** - त देर काहे भईल ? बहुत देर में वापस अइला!

**भग्गु** - अरे का बताई ! पहिले आफिस जब खुलल त सब जगह पर बहुत देर तक दवाई छिड़कल गयल।

**रघु** - अरे उ सनीटाइजर छिड़कत रहल होईहैं।

**भग्गु** - ए समय एक बीमारी कोना का डर इतना फइल गयल बाय कि हर जगह पर पहिले उही क इन्तजाम करैके हवै।

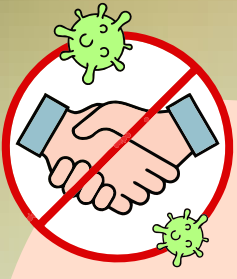
**रघु** - अरे भाई ! उ कोना नही, ओ बीमारी का नाव कोरोना हवे। ओके कोरोना कहल जाला।

**भग्गु** - हॉ! हॉ! उहै कोरोना। अब आगे क बात सुना। त जब देर तक उ दवाई एहर ओहर, दाँये, बाँये ऊपर, नीचे कुल जगह पर एक दम बरोबर से छिड़का गयल, तब जाके एक जने रजिस्टर लेके बैठ गइने।

**रघु** - अच्छा फिर का भयल ? नाव, गाँव पूछले होईहैं।

**भग्गु** - हॉ नाव गाँव त पूछने। पर तब हम उनसे कहनी कि देखा हमार एक मिनट क काम हवे। त उ हमसे कहे लगने कि तूही के जल्दी हवे। एतना भयानक बीमारी क डर बाय। अगर हो गईल त कुल जल्दबाजी भीतर चल जायी। अउर महिना भर





के लिए छुट्टी हो जायी। पैसा उइसा क जियान होइ उ अलग से।

**रघु** - फिर तू का कहला ?

**भग्गु** - अरे हम का कहनी । बात समझ गइनी । हम आपन नाव, गाँव, मोबाइल नम्बर सब कुछ बतौनी ।

**भग्गु रघु** - तब अंदर गइला ।

**रघु** -नाही भाई ! जैसे हम पूछनी कि अन्दर जाई, तब तक एक जने एक मशीन हमरे चेहरा के पास लाके लगा देहने ।

**रघु**- अच्छा !

**भग्गु** - हम पूछनी, काहे फोटो खिंचत हवा ? हम कउनो चोर थोड़े हई।

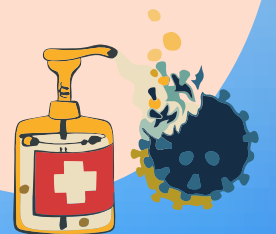
**रघु** - अरे उ शरीर का ताप नापत रहल होइहैं। कहीं बुखार उखार त नान हवै।

**रघु** -मास्क लगौले रहला कि ना?

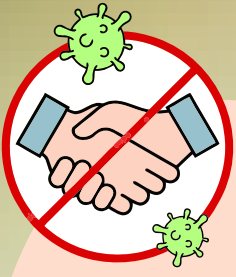
**भग्गु** -आगे त सुना , उ कहने कि मास्क लगा लो। दिक्कत इ कि हमरे पास त मास्क रहबै ना कयल।

**रघु** -तब त उ डटलहु होईहैं।

**भग्गु** - अरे तब तक हमार दिमाग तुरन्त काम कर गयल । हम देखनी कि कुछ लोग







अपन नाक, मुँह गमछा से ही ढकले बाँटे। अउर अन्दर जात हवै। हम सोचनी की इ उपाय त ठीक हवै।

**रघु** - तब का कइला?

**भग्गु** - हम अपन गमछा तुरन्त सामने ले अइनी। अउर कहनी कि देखा भइया ! हमार ई गमछा ही हमार मास्क हवै। ओही के तुरन्तै लगा लेहनी।

**रघु** - अच्छा ! तब अन्दर गईला।

**भग्गु** -हाँ ! अरे अन्दर गइनी। तब हम देखनी कि वहाँ पर सब लोग दूर दूर लाइन में लगल हवै। हमहूँ लाइन लग गइनी। लाइन में एक जनी लगातार सबके दूर दूर खड़ा भईले क नसीहत देत रहने।

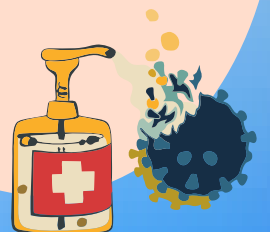
**रघु** -तब ?

**भग्गु** - हम एक जने के पास तनी करीब हो गइनी, त उ नाराज हो गइने। अंग्रेजी में कुछ डाँटे लगने। उ थोड़ा सूट बूट पहिनले रहना।

**रघु** - उ का कहन?

**भग्गु** - देखा भाई हमके अंग्रेजी त आवत ना। लेकिन उनके इशारा से हम समझ गइनी कि उ दूर रहै के कहत हवै।

**रघु** - हाँ! हाँ! कोरोना में सब लोगन के एक दूसरे से दूर रहै के चाही। एही बात के त सब जगह बतावल जाला। नही त लोग एक जगह पर एतना भीड़ मचा दे कि कोरोना





बीमारी आसानी से सबके पास चल जाई।

**भग्गु** - हॉ !हॉ ! हमहूँ इ बात समझ गइनी। काहे कि वहाँ पर सब जगह लिखल रहल कि  
- दो गज दूरी बहुत जरूरी। एक बात अउर देखनी।

**रघु** -उका देखला ?

**भग्गु**- कुछ लोग पाकेट में छोट शीशी में तेल रखले रहने, अउर ओके बार बार हाथे में लगावत रहने।

**रघु**- अरे उ त सेनीटाइजर रहल होई। कहीं अनजान वस्तु से कोरोना न फइले, एकरे खातिर लगावल जाला।

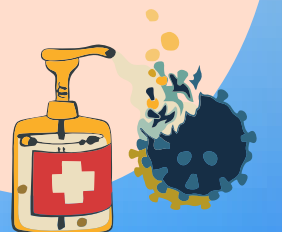
**भग्गु** - अब हमके का पता। लेकिन हम एक काम कइनी।

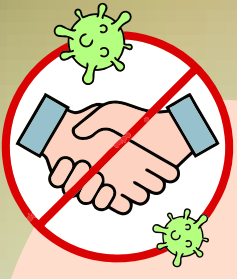
**रघु** -उका?

**भग्गु** -एक जगह पर लोग साबुन से हाथ रगड़ रगड़ के धोवत रहने। त हम सोचनी कि सब लोग धोवत हवै, त ले आवा हमहूँ धो लेई। अउर हमहूँ हाथ के रगड़ के धोअनी।

**रघु** - अरे उ जेकरे सेनीटाइजर ना रहल होइ, उ लोग सावधानीवश हाथ साबुन से धोअत रहल होईहै। तू धो लेहला त अच्छे कइला। फिर का भयल ?

**भग्गु** - फिर का ? काफी देर बाद जब हमार नम्बर आयल त हम काउन्टर पर पहुँच गईनी। जैसे हम वहाँ पर पूछल चहनी, तुरन्त एक मैडम बोलनी कि दूर से बात करो। त हम पीछे हट गइनी और कहनी कि रिपोर्टवा हमके दा। हम जाई।





**रघु** - - त रिपोर्ट मिल गयल।

**भग्गु** - अबही कहाँ ? उ हमके कहनी कि मास्क ठीक से लगाओ। हम तुरन्ते आपन गमछा से नाक मुँह, ढक लेहनी।

**रघु** -तब जाके रिपोर्ट मिलल।

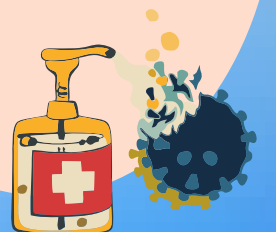
**भग्गु** - हॉ ! पहले उ हमार नाव गाँव पूछनी। तब जाके एक कागज पर दस्तख्त करैके कहनी ।

**रघु**- अच्छा

**भग्गु** - अ हॉ । हम ओ कागज पर आपन दस्तख्त कइनी, अउर तब जाके रिपोर्ट मिलल।

**रघु** - त आगे से धियान दिहा कि कोरोना के दौर में कही गईले के पहिले इतना कुल तैयारी करके जाये के चाही।

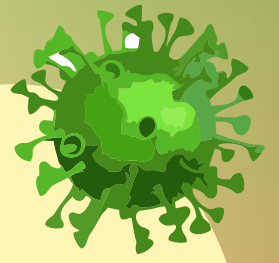
**भग्गु** - बिल्कुल सही बात हवै। अब हमके समझ बन गयल कि कोविड में बचाव हम सबके जिम्मेदारी हवै । अउर सरकार कुल व्यवस्था हमही लोगन के खातिर करत हवै।





# नियम पालन कराने का सचक तरीका





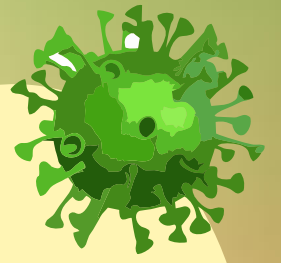
काफी प्रयास करने के बावजूद लोगों द्वारा कोविड गाइड लाइन के उल्लंघन की घटनाएं लगातार होती जा रही थी। मास्क लगाने और दूरी बनाये रखने की बात के प्रति लोग लगातार लापरवाही बरत रहे थे। पुलिस सड़क पर लोगों को बार बार मास्क पहनने के लिए टोकती तो लोग मुस्करा करके आगे बढ़ जाते। उधर सरकार की तरफ से लगातार इस बात पर जोर दिया जा रहा था कि कोरोना बीमारी के रोक थाम के लिए लोगों को कोविड गाइड लाइन का पालन कराया जाये।

किन्तु सरकार के पास लगातार यही रिपोर्ट जा रही थी कि लोग कोविड नियम का पालन नहीं कर रहे हैं। इसी बीच दूसरी लहर अभी पूरी तरह से थमी नहीं थी कि तीसरी लहर के बारे में भी चर्चा आरम्भ हो गयी थी। सभी समाचारपत्रों में विभिन्न कोविड विशेषज्ञों के रिपोर्ट कई बार मोटे मोटे शीर्षक से छप चुके थे। इस कारण से सरकार अभी से सतर्क हो गयी कि इस बार किसी प्रकार की कोई कोताही नहीं बरतनी है। सरकार के विभिन्न विभाग अपने हर प्रकार के क्रिया कलाप में अपने सभी कर्मचारियों से कोविड गाइड लाइन के पालन करवाने की पूरी कोशिश करते और इसके लिए हर प्रकार का उपाय कर रहे थे।

उधर जनमाध्यम किसी भी एक केस को पकड़ लेते तो फिर पूरे दिन उसके बारे में लगातार शोर मचाते रहते कि कोविड नियम का पालन नहीं किया जा रहा है। फिर सरकार के कानों में इसकी आवाज पहुँचती तो फिर वह अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इसका पालन करने के लिए दबाव डालती। अब सरकार के लिए यह आवश्यक हो गया कि कोविड के प्रति लोगों की गंभीरता बनी रहे और लोग कोविड के नियम का पालन करें जिससे कि लोग रोग से लोग संक्रमित न हो।

काफी सोच विचार करने के बाद यह तय किया गया कि इसके लिए काफी बड़ा जुर्माना लगाया जाये, जिससे कि जनता में भय उत्पन्न हो। कितना जुर्माना लगाया जाये,



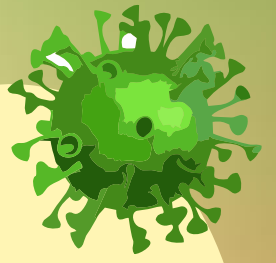


इस पर कोई स्पष्ट राय नहीं बन पा रही थी। किन्तु यह विचार सबका था कि जुर्माने की रकम अच्छी खासी होनी चाहिए। अन्त में यह तय किया गया कि यदि मास्क और सोशल डिस्टेंस का उल्लंघन करने के लिए दस हजार रुपया जुर्माना लगा दिया जाये तो फिर लोग डर करके अवश्य ही इसका पालन करेंगे। इसके लिए प्रशासन के लोगों ने पूरा कमर कस लिया था।

अब बड़े जोर शोर से इस कानून का प्रचार किया गया। मीडिया के लोगों को बाकायदे एक प्रेस कान्फ्रेंस करके इसके बारे में जानकारी दी गयी। बहुत से लोगों ने इस निर्णय के लिए प्रशासन की निन्दा भी आरम्भ कर दी। आखिर इतनी बड़ी जुर्माने की राशि आम जनता कैसे भरेगी। किन्तु प्रशासन का दावा था कि यह आम जनता की जान माल की रक्षा के लिए ही किया जा रहा है। टीवी पर इस पर बहस छिड़ गई कि इस प्रकार से जुर्माना लगा करके क्या कोविड नियम का पालन कराना उचित है। कुछ लोग इसके पक्ष में रहते तो कुछ लोग इसके खिलाफ तर्क देते। सरकार से लगातार इसके बारे में सवाल जवाब किये जाते। किन्तु प्रशासन के लोगों को हमेशा बस एक ही जवाब रहता कि यह लोगों के हित में किया जा रहा है। इस विषय पर इतना बहस होने लगा कि टीवी चैनल पर इसी के बारे में दिन रात चर्चा होने लगी। उधर जुर्माना लगाने का समय नजदीक आता जा रहा था, उसी के साथ इसको लेकर बहस एवं अन्य समाचार भी खूब दिये जाने लगे।

जिस दिन से कानून लागू करने की बात थी, उस दिन विभिन्न समाचार चैनलों की कैमरा की टीम उन सभी जगहों पर कैमरा ले करके पहुँच गयी, जहाँ पर इसकी जाँच की जानी थी। प्रशासन के लोग अब जगह जगह पर खड़ा हो करके इसके उल्लंघन करने वालों पर नजर रखना शुरू कर दिया। प्रशासन की तरफ से बहुत ही जबरदस्त व्यवस्था की गयी थी। इसलिए जैसे ही कोई कानून का उल्लंघन करता, उसे पकड़ करके तुरन्त जुर्माना लगा दिया जाता। वह व्यक्ति लाख मिन्नते करता, किन्तु कहीं





पर किसी प्रकार की कोई सुनवाई नहीं की जाती। बहुत लोग तो रोने लगते, किन्तु उन्हें डांट करके चुप करा दिया जाता। जो भी व्यक्ति जुर्माना नहीं भरता। उसके वाहन को जप्त कर दिया जाता। इन सब कार्यों की रिकार्डिंग भी खूब की गयी। इस प्रकार से एक दिन के लिए सब जगहों पर इसी प्रकार से अभियान चलाया गया। पहले दिन इस प्रकार के चलाये गये अभियान के बारे में दूसरे दिन विभिन्न जनमाध्यमों में बड़े बड़े शीर्षक में समाचार प्रकाशित हुए। इसके साथ फोटो भी दिये गये थे। यह पढ़ करके सब लोग दंग रह गये। अब तो हर घर में इस बात की जबरदस्त ढंग से चर्चा होने लगी कि इस प्रकार के जुर्माने लगाये जा रहे हैं। इस कारण से अब सभी लोग सतर्क होने लगे। अब जो कोई भी घर से बाहर निकलता था वह मास्क जरूर लगाये रहता था। इसी के साथ वह सैनीटाइजर का भी इस्तेमाल करने के लिए उसे साथ में रखने लगा। सिर्फ एक दिन के इस अभियान का इतना बड़ा परिणाम निकला।

बाद में पता चला कि प्रशासन की यह एक गुप्त योजना थी, जिसके अन्तर्गत प्रशासन के ही कुछ लोग आम नागरिक के तौर पर कानून का उल्लंघन करते हुए दिखाये गये और उन्हें फिर उन्हें जुर्माना भरते देते हुए दिखाया गया, जिससे कि आम नागरिक में इसके कोविड बचाव के प्रति जागरूकता फैले। लेकिन यह बात सबको नहीं पता चल सकी।





**डॉ अरविंद कुमार सिंह**, वर्तमान में- असिस्टेंट प्रोफेसर (जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ);  
पूर्व में -असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी - पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान , छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ,(2004 से 2018 तक);

**शिक्षा-** भौतिकी विषय में बीएससी ऑनर्स ,एमजेएमसी , पत्रकारिता और जनसंचार विषय में पीएचडी; संपूर्ण उच्च शिक्षा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से।विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की यूजीसी नेट एवं जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ-साथ यूजीसी जेआरएफ एवं एसआरएफ फैलोशिप प्राप्त किया। आरंभ में दैनिक जागरण (वाराणसी) में कई वर्षों तक कार्य करने के पश्चात कुछ अन्य हिंदी एवं अंग्रेजी समाचार पत्रों में अल्पावधि के लिए कार्य किया।आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों से विविध कार्यक्रमों में भागीदारी।१०० से भी अधिक शैक्षिक टीवी कार्यक्रमों के लिए स्क्रिप्ट लेखन, जिनका कि लखनऊ एवं दूरदर्शन एवं ज्ञानदर्शन चैनल से समय-समय पर प्रसारण किया गया।पूर्व में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से यूजीसी फेलो तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में विजिटिंग एवं लखनऊ विश्वविद्यालय में अतिथि प्रवक्ता के रूप में शिक्षण कार्य किया। विविध प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रमों में भागीदारी एवं व्याख्यान। शोध पत्रों में शोध लेख के अतिरिक्त विभिन्न समाचार पत्रों में लेखन कार्य। लिखी गई पुस्तकें-वेब पत्रकारिता, वेब माध्यम- लेखन एवं पत्रकारिता, इंटरनेट एवं न्यू मीडिया टेक्नोलॉजी, सोशल मीडिया, सोशल- मीडिया- तकनीक एवं प्रभाव, रेडियो प्रोग्राम एवं प्रोडक्शन तकनीक, रेडियो मीडिया- कार्यक्रम प्रसारण टेक्नोलॉजी, रेडियो कार्यक्रम- लेखन एवं प्रसारण, रेडियो पत्रकारिता, फिल्म एवं टीवी स्क्रिप्ट लेखन।

अभी हाल में कोविड जागरूकता हेतु कोविड कविता, कोविड कहानी, कोविड नाटक, कोविड नारे एवं कोविड पहली नाम से ई- बुक का लेखन कार्य

पुरस्कार- उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा बाबू विष्णु राव पराड़कर पुरस्कार से सम्मानित